

प्रधानमंत्री कार्यालय



ट्राई के रजत जयंती समारोह में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 17 MAY 2022 1:40PM by PIB Delhi

नमस्कार, केंद्रीय मंत्रिमंडल में मेरे सहयोगी श्री अश्विनी वैष्णव जी, श्री देवुसिंह चौहान जी, डॉक्टर एल मुरुगन जी, टेलिकॉम और ब्रॉडकास्टिंग सेक्टर से जुड़े सभी लीडर्स, देवियों और सज्जनों!

Telecom Regulatory Authority of India - TRAI इससे जुड़े सभी साथियों को सिल्वर जुबली की बहुत बहुत बधाई। ये सुखद संयोग है कि आज आपकी संस्था ने 25 साल पूरे किए हैं, तब देश आज़ादी के अमृतकाल में अगले 25 वर्षों के रोडमैप पर काम कर रहा है, नए लक्ष्य तय कर रहा है। थोड़ी देर पहले मुझे देश को अपना, खुद से निर्मित 5G Test-bed राष्ट्र को समर्पित करने का अवसर मिला है। ये टेलिकॉम सेक्टर में क्रिटिकल और आधुनिक टेक्नोलॉजी की आत्मनिर्भरता की दिशा में एक अहम कदम है। मैं इस प्रोजेक्ट से जुड़े सभी साथियों को, हमारे IITs को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। साथ ही मैं देश के युवा साथियों को, researchers और companies को आमंत्रित करता हूँ कि वो इस टेस्टिंग फैसिलिटी का उपयोग 5G टेक्नोलॉजी के निर्माण के लिए करें। विशेष रूप से हमारे स्टार्ट अप्स के लिए अपने प्रोडक्ट टेस्ट करने का ये बहुत बड़ा अवसर है। यही नहीं, 5Gi के रूप में जो देश का अपना 5G standard बनाया गया है, वो देश के लिए बहुत गर्व की बात है। ये देश के गांवों में 5G टेक्नोलॉजी पहुंचाने और उस काम में बड़ी भूमिका निभाएगा।

साथियों,

21वीं सदी के भारत में कनेक्टिविटी, देश की प्रगति की गति को निर्धारित करेगी। इसलिए हर स्तर पर कनेक्टिविटी को आधुनिक बनाना ही होगा। और इसकी बुनियाद का काम करेंगे आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण, आधुनिक टेक्नोलॉजी का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल। 5G टेक्नोलॉजी भी, देश की गवर्नेंस में, ease of living, ease of doing business इन अनेक विषयों में सकारात्मक बदलाव लाने वाली है। इससे खेती, स्वास्थ्य, शिक्षा, इंफ्रास्ट्रक्चर और logistics, हर सेक्टर में प्रोथ को बल मिलेगा। इससे सुविधा भी बढ़ेगी और रोजगार के भी नए अवसर बनेंगे। अनुमान है कि आने वाले डेढ़ दशक में 5G से भारत की अर्थव्यवस्था में 450 बिलियन डॉलर का योगदान होने वाला है। यानि ये सिर्फ इंटरनेट की गति ही नहीं, बल्कि प्रगति और Employment Generation की गति को भी बढ़ाने वाला है। इसलिए, 5G तेज़ी से rollout हो, इसके लिए सरकार और इंडस्ट्री, दोनों को collective efforts की ज़रूरत है। इस दशक के अंत तक हम 6G सर्विस भी लॉन्च कर पाएं, इसके लिए भी हमारी टास्क फोर्स काम करना शुरू कर चुकी है।

साथियों,

हमारा प्रयास है कि टेलिकॉम सेक्टर और 5G टेक्नोलॉजी में हमारे स्टार्ट अप्स तेज़ी से तैयार हों, ग्लोबल चैंपियन बनें। हम अनेक सेक्टर्स में दुनिया के एक बड़े डिज़ायन पावर हाउस हैं। Telecom equipment मार्केट में भी भारत के डिज़ायन चैंपियन्स का सामर्थ्य हम सभी जानते हैं। अब इसके लिए ज़रूरी R&D इंफ्रास्ट्रक्चर और प्रक्रियाओं को आसान बनाने पर हमारा विशेष फोकस है। और इसमें आप सबकी भी बहुत बड़ी भूमिका है।

साथियों,

आत्मनिर्भरता और स्वस्थ स्पर्धा कैसे समाज में, अर्थव्यवस्था में multiplier effect पैदा करती है, इसका एक बेहतरीन उदाहरण हम सब गर्व से कह सकते हैं, हमारा टेलिकॉम सेक्टर है। हम जरा पुरानी तरफ नजर करें 2G का काल, 2G का काल यानि निराशा, हताशा, करप्शन, पॉलिसी पैरालिसिस और आज उस कालखंड से बाहर निकलकर देश ने 3G से 4G और अब

5G और 6G की तरफ तेज़ी से कदम बढ़ाए हैं। ये transition बहुत smoothly, बहुत transparency के साथ हो रहा है और इसमें TRAI की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। Retrospective taxation हो, या AGR जैसे मुद्दे, जब भी इंडस्ट्री के सामने चुनौतियां आई हैं, तो हमने उतनी ही गति से respond करने का प्रयास किया है और जहां-जहां जरूरत पड़ी हमने reform भी किया है। ऐसे ही प्रयासों ने एक नया विश्वास पैदा किया। इसी का परिणाम है कि 2014 से पहले एक दशक से ज्यादा समय में जितना FDI टेलिकॉम सेक्टर में आया है, उससे डेढ़ गुणा से अधिक सिर्फ इन 8 सालों में आया है। भारत के potential पर investors के इसी sentiment को मज़बूत करने की ज़िम्मेदारी हम सभी पर है।

साथियों,

बीते वर्षों में सरकार जिस तरह नई सोच और अप्रोच के साथ काम कर रही है, उससे आप सभी भली-भांति परिचित हैं। Silos वाली सोच से आगे निकलकर अब देश whole of the government approach के साथ आगे बढ़ रहा है। आज हम देश में tele-density (टेली-डेंसिटी) और internet users के मामले में दुनिया में सबसे तेज़ी से expand हो रहे हैं तो उसमें टेलीकॉम समेत कई सेक्टरों की भूमिका रही है। सबसे बड़ी भूमिका internet की है। 2014 में जब हम आए तो हमने **सबका साथ, सबका विकास** और इसके लिए टेक्नोलॉजी के व्यापक उपयोग को अपनी प्राथमिकता बनाया। इसके लिए सबसे ज़रूरी ये था कि देश के करोड़ों लोग आपस में जुड़ें, सरकार से भी जुड़ें, सरकार की भी सभी इकाइयां चाहे केंद्र हो, राज्य हो, स्थानीय स्वराज संस्थाएं हों, वे भी एक प्रकार से एक आर्गेनिक इकाई बनकर के आगे बढ़ें। आसानी से कम से कम खर्च में जुड़ें, बिना करप्शन के सरकारी सेवाओं का लाभ ले सकें। इसलिए हमने जनधन, आधार, मोबाइल की ट्रिनिटी को डायरेक्ट गवर्नेंस का माध्यम बनाना तय किया। मोबाइल गरीब से गरीब परिवार की भी पहुंच में हो, इसके लिए हमने देश में ही मोबाइल फोन की मैनुफेक्चरिंग पर बल दिया। परिणाम ये हुआ कि मोबाइल मैनुफेक्चरिंग यूनिट्स 2 से बढ़कर 200 से अधिक हो गईं। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा मोबाइल फोन मैनुफेक्चरर है, और जहां हम अपनी ज़रूरत के लिए फोन इंपोर्ट करते थे, आज हम मोबाइल फोन एक्सपोर्ट के नए रिकॉर्ड बना रहे हैं।

साथियों,

मोबाइल कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए ज़रूरी था कि कॉल और डेटा महंगा ना हो। इसलिए टेलिकॉम मार्केट में healthy competition को हमने प्रोत्साहन किया। इसी का परिणाम है कि आज हम दुनिया के सबसे सस्ता डेटा प्रोवाइडर्स में से एक हैं। आज भारत देश के हर गांव तक ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ने में जुटा है। आपको भी पता है कि 2014 से पहले भारत में सौ ग्राम पंचायतें भी ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी से नहीं जुड़ी थीं। आज हम करीब-करीब पौने दो लाख ग्राम पंचायतों तक ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी पहुंचा चुके हैं। कुछ समय पहले ही सरकार ने देश के नक्सल प्रभावित अनेक जनजातीय जिलों में भी 4G कनेक्टिविटी पहुंचाने की बहुत बड़ी योजना को स्वीकृत किया है। ये 5G और 6G टेक्नोलॉजी के लिए भी अहम है और मोबाइल और इंटरनेट के दायरे का भी इससे विस्तार होगा।

साथियों,

फोन और इंटरनेट तक ज्यादा से ज्यादा भारतीयों की पहुंच ने भारत के एक बहुत बड़े potential को खोल लिया है। इसने देश में एक सशक्त डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की नींव रखी है। इसने देश में सर्विस की एक बहुत बड़ी डिमांड पैदा की है। इसका एक उदाहरण, देश के कोने-कोने में बनाए गए 4 लाख कॉमन सर्विस सेंटर हैं। इन कॉमन सर्विस सेंटर से आज सरकार की सैकड़ों सर्विसेस, गांव के लोगों तक पहुंच रही है। ये कॉमन सर्विस सेंटर लाखों युवाओं को रोजगार का भी माध्यम बने हैं। मैं पिछले दिनों गुजरात में एक कार्यक्रम में गया था। वहां दाहोड जिला जो जनजाति एक क्षेत्र है आदिवासी विस्तार है। वहां का एक दिव्यांग कपल मिला मुझे। वो कॉमन सर्विस सेंटर चलाते हैं। उन्होंने कहा मैं दिव्यांग था तो मुझे ये थोड़ी मदद मिल गई और मेने शुरू किया, और आज वो 28-30 हजार रुपया आदिवासी क्षेत्र के दूर दराज गांव में कॉमन सर्विस सेंटर से कमा रहे हैं। मतलब ये हुआ कि आदिवासी क्षेत्र के नागरिक भी ये सेवाएं क्या हैं, ये सेवाएं कैसे ली जाती हैं, ये सेवा कितनी सार्थक है इसको भी जानते हैं और एक दिव्यांग कपल वहां छोटे से गांव में लोगों की सेवा भी करता है, रोजी रोटी भी कमाता है। ये digital technology किस प्रकार से बदलाव ला रही है।

साथियों,

हमारी सरकार टेक्नोलॉजी को निरंतर अपग्रेड करने के साथ-साथ देश के डिजिटल सिस्टम को भी लगातार सुधार रही है। इसने देश में सर्विस और मैनुफेक्चरिंग, दोनों से जुड़े स्टार्ट अप इकोसिस्टम को बल दिया है। ये भारत को दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट अप इकोसिस्टम बनाने के पीछे एक अहम कारण है।

साथियों,

ये whole of the government Approach हमारे TRAI जैसे तमाम regulators के लिए भी वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए अहम है। आज regulation सिर्फ एक sector की सीमाओं तक सीमित नहीं है। टेक्नॉलॉजी अलग-अलग सेक्टर्स को inter-connect कर रही है। इसलिए आज collaborative regulation की ज़रूरत हर कोई स्वाभाविक रूप से अनुभव कर रहा है। इसके लिए ज़रूरी है कि तमाम रेगुलेटर्स साथ आएँ, common platforms तैयार करें और बेहतर तालमेल के साथ समाधान निकालें। मुझे पूरा विश्वास है कि इस कॉन्फ्रेंस से इस दिशा में महत्वपूर्ण समाधान निकलकर आएगा। आपको देश के टेलीकॉम कंज्यूमर्स के Interests की भी सुरक्षा करनी है और दुनिया के सबसे आकर्षक टेलिकॉम मार्केट की ग्रोथ को भी प्रोत्साहित करना है। TRAI की सिल्वर जुबली कॉन्फ्रेंस, हमारी आज़ादी के अमृतकाल की ग्रोथ को गति देने वाली हो, उर्जा देने वाली हो, नया विश्वास पैदा करनी वाली हो, एक नई छलांग मारने के सपने देखने वाली हो और साकार करने के संकल्प वाली हो, इसी कामना के साथ आप सभी का बहुत-बहुत आभार! आप सबको अनेक – अनेक शुभकामनाएं बहुत-बहुत धन्यवाद !

DS/LP/AK/DK

(रिलीज़ आईडी: 1827594) आगंतुक पटल : 135

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Bengali , Assamese , Manipuri , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय



प्रगति मैदान, दिल्ली में भारत ड्रोन महोत्सव के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 27 MAY 2022 3:27PM by PIB Delhi

मंच पर उपस्थित केंद्रीय मंत्रिमंडल के मेरे सहयोगीगण, भारत ड्रोन महोत्सव में देशभर से जुटे सभी अतिथिगण, यहां उपस्थित अन्य महानुभाव, देवियों और सज्जनों!

आप सभी को भारत ड्रोन महोत्सव इस आयोजन के लिए मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मैं देख रहा हूं कि सभी वरिष्ठ लोग यहां मेरे सामने बैठे हैं। मुझे आने में विलंब हो गया। विलंब इसलिए नहीं हुआ कि मैं देर से आया। यहां तो मैं समय पर आ गया था। लेकिन ये ड्रोन की जो प्रदर्शनी लगी है। उसे देखने में मेरा मन ऐसा लग गया कि मुझे समय का ध्यान ही नहीं रहा। इतना लेट आया फिर भी मैं मुश्किल से दस प्रतिशत चीजों को देख पाया और मैं इतना प्रभावित हुआ, अच्छा होता मेरे पास समय होता मैं पूरा एक-एक स्टॉल पर जाता और नौजवानों ने जो काम किया है उसको देखता, उनकी कथा सुनता। सब तो नहीं कर पाया, लेकिन जो भी मैं कर पाया, मैं आप सबसे आग्रह करूंगा, मैं सरकार के भी सभी विभागों से आग्रह करूंगा कि आपके अलग-अलग स्तर के जितने अधिकारी हैं, जो पॉलिसी मेकिंग में जिनका रोल रहता है। वे जरूर दो-तीन घंटे यहां निकालें, एक-एक चीज को समझने की कोशिश करें। यहां उनको टेक्नोलॉजी को देखने को मिलेगा और उनको अपने दफ्तर में ही पता चलेगा कि ये टेक्नोलॉजी अपने यहां ऐसे उपयोग में हो सकती है। यानि गवर्नेंस में भी अनेक ऐसे initiatives हैं, जो हम इसके आधार पर चला सकते हैं। लेकिन मैं वाकई में कहता हूं कि मेरे लिए एक बहुत ही सुखद अनुभव रहा आज, और भारत के नौजवानों और मुझे खुशी इस बात की होती थी कि जिन-जिन स्टॉल पर गया तो बड़े गर्व से कहता था, साहब ये मेक इन इंडिया है, ये सब हमने बनाया है।

साथियों,

इस महोत्सव में देश के अलग-अलग हिस्सों से आए हमारे किसान भाई-बहन भी हैं, ड्रोन इंजीनियर भी हैं, स्टार्ट अप्स भी हैं, विभिन्न कंपनियों के लीडर्स भी यहां मौजूद हैं। और दो दिनों में यहां हजारों लोग इस महोत्सव का हिस्सा बनने वाले हैं, मुझे पक्का विश्वास है। और अभी मैं एक तो मैंने प्रदर्शनी भी देखी, लेकिन जो actually ड्रोन के साथ अपना कामकाज चलाते हैं। और उसमें मुझे कई युवा किसानों से मिलने का मौका मिला, जो खेती में ड्रोन टेक्नोलॉजी का उपयोग कर रहे हैं। मैं उन युवा इंजीनियर्स से भी मिला, जो ड्रोन टेक्नोलॉजी को प्रोत्साहित कर रहे हैं। आज 150 drone pilot certificate भी यहां दिए गए हैं। मैं इन सभी drone pilots को और इस काम में जुड़े हुए सभी को अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं।

साथियों,

ड्रोन टेक्नोलॉजी को लेकर भारत में जो उत्साह देखने को मिल रहा है, वो अद्भुत है। ये जो ऊर्जा नज़र आ रही है, वो भारत में ड्रोन सर्विस और ड्रोन आधारित इंडस्ट्री की लंबी छलांग का प्रतिबिंब है। ये भारत में Employment Generation के एक उभरते हुए बड़े सेक्टर की संभावनाएं दिखाती है। आज भारत, स्टार्ट अप पावर के दम पर दुनिया में ड्रोन टेक्नोलॉजी का सबसे बड़ा एक्सपर्ट बनने की ओर तेज गति से आगे बढ़ रहा है।

साथियों,

ये उत्सव, सिर्फ एक टेक्नोलॉजी का नहीं बल्कि नए भारत की नई गवर्नेंस का, नए प्रयोगों के प्रति अभूतपूर्व Positivity का भी उत्सव है। संयोग से 8 वर्ष पहले यही वो समय था, जब भारत में हमने सुशासन के नए मंत्रों को लागू करने की शुरुआत की थी। मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस के रास्ते पर चलते हुए, ease of living, ease of doing business को हमने प्राथमिकता बनाया। हमने सबका साथ, सबका विकास के मंत्र पर चलते हुए देश के हर नागरिक, हर क्षेत्र को सरकार से कनेक्ट करने का रास्ता चुना। देश में सुविधाओं का, पहुंच का, डिजीवरी का एक जो divide हमें अनुभव होता था, उसके लिए हमने आधुनिक Technology पर भरोसा किया, उसे एक महत्वपूर्ण bridge के रूप में व्यवस्था का हिस्सा बनाया। जिस technology तक देश के एक बहुत छोटे से वर्ग की पहुंच थी, हमारे यहां ये मान लिया गया टेक्नोलॉजी यानि एक बड़े रहीस लोगों को कारेबार है। सामान्य मानवीय की जिंदगी में उसका कोई स्थान नहीं है। उस पूरी मानसिकता को बदलकर के हमने टेक्नोलॉजी को सर्वजन के लिए सुलभ करने की दिशा में अनेक कदम उठाए हैं, और आगे भी उठाने वाले हैं।

साथियों,

जब टेक्नोलॉजी की बात आती है तो हमने देखा है, हमारे यहां कुछ लोग टेक्नोलॉजी का डर दिखाकर उसे नकारने का प्रयास भी करते हैं। ये टेक्नोलॉजी आएगी तो ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा। अब ये बात सही है कि एक जमाने में पूरे शहर में एक टॉवर हुआ करता था। उसकी घड़ी के घंट बजते थे और गांव का समय तय होता था तक किसने सोचा था कि हर गली हर एक की कलाई पर घड़ी लगेगी। तो जब परिवर्तन आया होगा तो उनको भी अजूबा लगा होगा और आज भी कुछ लोग होंगे, जिनको मन करता होगा कि हम भी गांव में एक टॉवर बना दें और वहां हम भी एक घड़ी लगा दें। किसी जमाने में उपयोगी होगा यानि जो बदलाव होता है। उस बदलाव के साथ हमें अपने को बदलना व्यवस्थाओं को बदलना तभी प्रगति संभव होती है। हमने हाल ही में कोरोना वैक्सीनेशन के दौरान भी बहुत अनुभव किया है। पहले की सरकारों के समय टेक्नोलॉजी को problem का हिस्सा समझा गया, उसको anti-poor साबित करने की कोशिशें भी हुईं। इस कारण 2014 से पहले गवर्नेंस में टेक्नोलॉजी के उपयोग को लेकर एक प्रकार से उदासीनता का ही वातावरण रहा। किसी ने इक्के-दुक्के व्यक्ति ने अपनी रुचि के अनुसार कर लिया तो कर लिया, व्यवस्था का स्वभाव नहीं बना। इसका सबसे अधिक नुकसान देश के गरीब को हुआ है, देश के वंचित को हुआ है, देश के मिडिल क्लास को हुआ है, और जो aspirations के जज्बे से भरे हुए लोग थे उनको निराशा की गर्त में जिंदगी गुजारने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

साथियों,

हम इस बात का इन्कार नहीं करते कि नई टेक्नोलॉजी disruption लाती है। वो नए माध्यम खोजती है, वो नये अध्याय लिखती है। वो नए रास्ते, नई व्यवस्था भी बनाती है। हम सभी ने वो दौर देखा है कि जीवन से जुड़े कितने ही आसान विषयों को कितना मुश्किल बना दिया गया था। मुझे नहीं पता कि आप में से कितने लोगों ने बचपन में राशन की दुकान पर अनाज के लिए, केरोसीन के लिए, चीनी के लिए लाइन लगाई होगी। लेकिन एक समय ऐसा था कि घंटों इसी काम में लाइन में लगे हुए गुजर जाते थे। और मुझे तो अपना बचपन याद है कि हमेशा एक डर रहता था कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरा नंबर आने तक अनाज खत्म हो जाएगा, दुकान बंद होने का समय तो नहीं हो जाएगा? ये डर 7-8 साल पहले हर गरीब के जीवन में रहा ही रहा होगा। लेकिन मुझे संतोष है कि आज टेक्नोलॉजी की मदद से हमने इस डर को समाप्त कर दिया है। अब लोगों में एक भरोसा है कि जो उनके हक का है, वो उन्हें मिलेगा ही मिलेगा। टेक्नोलॉजी ने last mile delivery को सुनिश्चित करने में, saturation के विजन को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ी मदद की है। और मैं जानता हूं कि हम इसी गति से आगे बढ़कर अंत्योदय के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। बीते 7-8 वर्षों का अनुभव मेरा विश्वास और मजबूत करता है। मेरा भरोसा बढ़ता जा रहा है। जनधन, आधार और मोबाइल की त्रिशक्ति- JAM इस ट्रिनिटी की वजह से आज हम देशभर में पूरी पारदर्शिता के साथ गरीब को उसके हक की चीजें जैसे राशन जैसी बातें हम पहुंचा पा रहे हैं। इस महामारी के दौरान भी हमने 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त राशन सुनिश्चित किया है।

साथियों,

ये हमारे टेक्नोलॉजी सॉल्यूशन को Correctly डिजाइन करने, Efficiently डेवलप करने और Properly Implement करने की शक्ति है कि आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन अभियान सफलता से चला रहा है। आज देश ने जो Robust, UPI फ्रेमवर्क डेवलप किया है, उसकी मदद से लाखों करोड़ रुपए गरीब के बैंक खाते में

सीधे ट्रांसफर हो रहे हैं। महिलाओं को, किसानों को, विद्यार्थियों को अब सीधे सरकार से मदद मिल रही है। 21वीं सदी के नए भारत में, युवा भारत में हमने देश को नई strength देने के लिए, speed और scale देने के लिए, टेक्नोलॉजी को अहम टूल बनाया है। आज हम टेक्नोलॉजी से जुड़े सही Solutions डेवलप कर रहे हैं और उनको Scale Up करने का कौशल भी हमने विकसित किया है। देश में ड्रोन टेक्नोलॉजी को प्रोत्साहन good governance के ease of living के इसी कमिटमेंट को आगे बढ़ाने का एक और माध्यम है। ड्रोन के रूप में हमारे पास एक और ऐसा स्मार्ट टूल आ गया है, जो बहुत जल्द सामान्य से सामान्य भारतीय के जीवन का हिस्सा बनने जा रहा है। हमारे शहर हों या फिर देश के दूर-दराज गांव-देहात वाले इलाके, खेत के मैदान हों या फिर खेल के मैदान, डिफेंस से जुड़े कार्य हों या फिर डिजास्टर मैनेजमेंट, हर जगह ड्रोन का इस्तेमाल बढ़ने वाला है। इसी तरह टूरिज्म सेक्टर हो, मीडिया हो, फिल्म इंडस्ट्री हो, ड्रोन इन क्षेत्रों में क्वालिटी और Content, दोनों को बढ़ाने में मदद करेगा। अभी जितना इस्तेमाल हो रहा है, ड्रोन का उससे कहीं ज्यादा इस्तेमाल हम आने वाले दिनों में देखने वाले हैं। मैं सरकार में हर महीने एक प्रगति कार्यक्रम चलाता हूँ। सभी राज्यों के मुख्य सचिव स्क्रीन पर होते हैं टीवी के और अनेक विषयों की चर्चा होती है, और मैं उनसे आग्रह करता हूँ कि ड्रोन से जो प्रोजेक्ट चल रहा है। मुझे वहां का पूरा लाइव demonstration दीजिए। तो मैं बड़ी आसानी से चीजों को coordinate करके वहां निर्णय करने की सुविधा बढ़ जाती है। जब केदारनाथ के पुनर्निर्माण का काम शुरू हुआ, अब हर बार तो मेरे लिए केदारनाथ जाना मुश्किल था तो मैं regularly केदारनाथ में कैसे काम चल रहा है, कितनी तेज गति से तो वहां से ड्रोन के द्वारा regularly मेरे दफ्तर में बैठकर के उसकी जब भी रिव्यू मिटिंग होती थी तो मैं ड्रोन की मदद से केदारनाथ के डेवलपमेंट के काम को regular मॉनिटर करता था। यानि आज सरकारी कामों की क्वालिटी को भी देखना है। तो मुझे जरूरी नहीं की मैं पहले से बता दूँ कि मुझे वहां इंसpeक्शन के लिए जाना है, तो फिर तो सबकुछ ठीक-ठाक हो ही जाएगा। मैं ड्रोन भेज दूँ, पता वो ही लेकर के आ जाता है और उनको पता तक नहीं चलता है कि मैंने जानकारी ले ली है।

साथियों,

गांव में भी किसान के जीवन को आधुनिक सुविधाजनक, अधिक संपन्न बनाने में भी ड्रोन टेक्नोलॉजी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली है। आज गांवों में अच्छी सड़कें पहुंची हैं, बिजली-पानी पहुंचा है, ऑप्टिकल फाइबर पहुंच रहा है, डिजिटल टेक्नोलॉजी का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। लेकिन फिर भी गांव में ज़मीन से जुड़े, खेती से जुड़े अधिकतर काम के लिए पुराने सिस्टम से काम चलाना पड़ता है। उस पुराने सिस्टम में हर प्रकार का wastage है, परेशानियां भी बहुत हैं, और productivity तो पता नहीं तय ही नहीं कर पाते कुछ हुआ कि नहीं हुआ। इसका सबसे अधिक नुकसान हमारे गांव के लोगों को होता है, हमारे किसानों को होता है, और उसमें भी ज्यादा हमारे छोटे किसानों को होता है। छोटे किसान की ज़मीन और उसके संसाधन इतने नहीं होते कि वो विवादों को चुनौती दे पाएं और कोर्ट कचहरी के चक्कर काट पाएं। अब देखिए, लैंड रिकॉर्ड से लेकर सूखा-बाढ़ राहत में फसल के डैमेज तक हर जगह रैवेन्यू डिपार्टमेंट के कर्मचारियों पर ही व्यवस्था निर्भर है। Human Interface जितना अधिक है, उतना ही अधिक भरोसे की भी कमी हो जाती है, और उसी में से विवाद पैदा होते हैं। विवाद होते हैं तो समय और धन की बर्बादी भी होती है। इंसान के अंदाज़े से आकलन होते हैं तो उतना सटीक अंदाज़ा भी नहीं लग पाता। इन सारी मुश्किलों से पार पाने का ड्रोन अपने आप में एक सशक्त प्रभावी माध्यम के रूप में एक नया टूल हमारे सामने आया है।

साथियों,

ड्रोन टेक्नोलॉजी कैसे एक बड़ी क्रांति का आधार बन रही है, इसका एक उदाहरण पीएम स्वामित्व योजना भी है। इस योजना के तहत पहली बार देश के गांवों की हर प्रॉपर्टी की डिजिटल मैपिंग की जा रही है, डिजिटल प्रॉपर्टी कार्ड लोगों को दिए जा रहे हैं। इसमें Human Intervention कम हुआ है, और भेदभाव की गुंजाइश खत्म हुई है। इसमें बड़ी भूमिका ड्रोन की रही है। थोड़ी देर पहले मुझे भी स्वामित्व ड्रोन उड़ाने का, उसकी टेक्नोलॉजी समझने का अवसर मिला है। थोड़ी देर उसके कारण भी हो गई। मुझे खुशी है कि ड्रोन की मदद से अभी तक देश में लगभग 65 लाख प्रॉपर्टी कार्ड generate हो चुके हैं। और जिसको ये कार्ड मिल गया है, उसको संतोष है कि हां मेरे पास मेरी जितनी जमीन है, मेरे पास सही डिटेल मिल गई है। पूरे संतोष के साथ उन्होंने इस बात को कहा है। वरना हमारे यहां अगर छोटी सी जगह की नाप-नपाई भी होती है, तो उसमें सहमति बनाने के लिए सालों-साल लग जाते हैं।

साथियों,

आज हम देख रहे हैं कि हमारे किसान ड्रोन टेक्नोलॉजी की तरफ तेजी से आकर्षित हो रहे हैं, उनमें एक उत्साह दिख रहा है, वो इसे अपनाने के लिए तैयार हैं। ये ऐसे ही नहीं हुआ है। ये इसलिए है क्योंकि पिछले 7-8 साल में जिस तरह कृषि क्षेत्र में टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल बढ़ाया गया है, उस वजह से टेक्नोलॉजी किसानों के लिए हौव्वा नहीं रह गई है, और एक बार किसान उसको देखता है थोड़ा अपने हिसाब से उसका लेखा जोखा कर लेता है और अगर उसका विश्वास बैठ गया तो स्वीकार करने में देर नहीं करता है। अभी मैं बाहर जब किसानों से बात कर रहा था तो मध्यप्रदेश के एक इंजीनियर मुझे बता रहे थे कि मुझे तो लोग अब ड्रोन वाला करके बुलाते हैं। बोले मैं इंजीनियर हुआ, लेकिन अब तो मेरी पहचान ड्रोन वाले की हो गई है। उन्होंने मुझे कहा कि साहब देखिए मैंने आपको कहा कि आप क्या भविष्य क्या देखते हैं? तो उन्होंने मुझे कहा कि साहब देखिए जब pulses मामला है ना हमारे यहां उसकी खेती बढ़ेगी। और उसमें कारण एक ड्रोन होगा, मैंने कहा कैसे? उन्होंने कहा साहब pulses की खेती होती है तब उसकी फसल की ऊंचाई ज्यादा हो जाती है तो किसान अंदर जाकर के दवाई ववाई के लिए उसका मन नहीं करता है, मैं कहां जाऊंगा, वो छिड़काव करता आधी तो मेरे शरीर पर पड़ती है, और बोले इसलिए वो उस फसल की तरफ वो जाता ही नहीं है। बोले अब ड्रोन के कारण ऐसी जो फसलें हैं, जो मनुष्य के ऊंचाई से भी कभी-कभी ऊंची होती हैं। ड्रोन के कारण उसकी देखभाल, उसकी दवाई का छिड़काव, बोले इतना आसान होने वाला है कि हमारे देश का किसान आसानी से pulses की खेती की तरफ जाएगा। अब एक व्यक्ति गांव के अंदर किसानों के साथ जुड़ने के साथ काम करता है। तो चीजों में कैसे बदलाव आता है। उसका अनुभव उसको सुनने को मिलता है।

साथियों,

आज हमने जो agriculture sector में टेक्नोलॉजी को लाने का प्रायास किया है। Soil Health Cards ये अपने आप में हमारे किसानों के लिए बहुत बड़ी ताकत बनकर के उभरा है। और मैं तो चाहूंगा जैसे ये ड्रोन की सेवाएं हैं, गांव-गांव soil tasting के लैब बन सकती है, नए रोजगार के क्षेत्र खुल सकते हैं। और किसान अपना हर बार soil tasting कराकर के तय कर सकता है कि मेरी इस मिट्टी में ये आवश्यकता है, ये जरूरत है। माइक्रो इरीगेशन, स्प्रींकलर ये सारी बातें आधुनिक सिंचाई व्यवस्था का हिस्सा बन रही हैं। अब देखिए फसल बीमा योजना, फसल बीमा योजना के अंदर सबसे बड़ा काम हमारी GPS जैसी तकनीक का उपयोग हो, e-NAM जैसी डिजिटल मंडी की व्यवस्था हो, नीम कोटेड यूरिया हो या फिर टेक्नोलॉजी के माध्यम से सीधे किसानों के खाते में पैसा जमा करने की बात हो। बीते 8 साल में जो ये प्रयास हुए हैं, उसने किसानों का टेक्नोलॉजी के प्रति भरोसा बहुत ज्यादा बढ़ा दिया है। आज देश का किसान टेक्नोलॉजी के साथ कहीं ज्यादा Comfortable है, उसे ज्यादा आसानी से अपना रहा है। अब ड्रोन टेक्नोलॉजी हमारे कृषि सेक्टर को दूसरे लेवल पर ले जाने वाली है। किस ज़मीन पर कितनी और कौन सी खाद डालनी है, मिट्टी में किस चीज़ की कमी है, कितनी सिंचाई करनी है, ये भी हमारे यहां अंदाज़े से होता रहा है। ये कम पैदावार और फसल बर्बाद होने का बड़ा कारण रहा है। लेकिन स्मार्ट टेक्नोलॉजी आधारित ड्रोन यहां भी बहुत काम आ सकते हैं। यही नहीं, ड्रोन ये भी पहचानने में सफल होते हैं कि कौन सा पौधा, कौन सा हिस्सा बीमारी से प्रभावित है। और इसलिए वो अंधाधुंध-स्प्रे नहीं करता, बल्कि स्मार्ट-स्प्रे करता है। इससे महंगी दवाओं का खर्च भी बचता है। यानि ड्रोन तकनीक से छोटे किसान को ताकत भी मिलेगी, तेजी भी मिलेगी और छोटे किसान की तरक्की भी सुनिश्चित होगी। और आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तो मेरा भी यही सपना है कि भारत में हर हाथ में स्मार्टफोन हो, हर खेत में ड्रोन हो और हर घर में समृद्धि हो।

साथियों,

हम देश के गांव-गांव में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स का नेटवर्क सशक्त कर रहे हैं, टेलीमेडिसिन को प्रमोट कर रहे हैं। लेकिन गांवों में दवाओं और दूसरे सामान की डिलीवरी एक बड़ी चुनौती रही है। इसमें भी ड्रोन से डिलीवरी बहुत कम यानि बहुत कम समय में और तेज गति से डिलीवरी होने की संभावना बनने वाली है। ड्रोन से कोविड वैक्सीन की डिलीवरी से इसका फायदा हमने अनुभव भी किया है। ये दूर-सुदूर के आदिवासी, पहाड़ी, दुर्गम क्षेत्रों तक उत्तम स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने में बहुत मददगार सिद्ध हो सकता है।

साथियों,

टेक्नोलॉजी का एक और पक्ष है, जिस पर मैं आपका ध्यान जरूर आकर्षित करना चाहता हूं। पहले के समय में टेक्नोलॉजी और उससे हुए Invention, Elite Class के लिए माने जाते थे। आज हम टेक्नोलॉजी को सबसे पहले Masses को उपलब्ध करा रहे हैं। ड्रोन टेक्नोलॉजी भी एक उदाहरण है। कुछ महीने पहले तक ड्रोन पर बहुत

सारे restrictions थे। हमने बहुत ही कम समय में अधिकतर restrictions को हटा दिया है। हम PLI जैसी स्कीम्स के जरिए भारत में ड्रोन मैनुफैक्चरिंग का एक सशक्त इकोसिस्टम बनाने की तरफ भी बढ़ रहे हैं। टेक्नोलॉजी जब Masses के बीच में जाती है, तो उसके इस्तेमाल की संभावनाएं भी ज्यादा से ज्यादा बढ़ जाती हैं। आज हमारे किसान, हमारे स्टूडेंट, हमारे स्टार्ट अप्स, ड्रोन से क्या-क्या कर सकते हैं, इसकी नई-नई संभावनाओं को तलाशने लगे हुए हैं। ड्रोन अब किसानों के पास जा रहा है, गांवों में जा रहा है तो भविष्य में विभिन्न कार्यों में ज्यादा इस्तेमाल की संभावना भी बढ़ी है। आप देखिएगा अब शहरों में ही नहीं गांव-देहात में भी ड्रोन के तरह-तरह के उपयोग निकलेंगे, हमारे देशवासी इसमें और इनोवेशन करेंगे। मुझे विश्वास है, आने वाले दिनों में ड्रोन टेक्नोलॉजी में और Experiment होंगे, इसके नए-नए इस्तेमाल होंगे।

साथियों,

भारत की ऐसी ही संभावनाओं, ऐसी ही scale को tap करने के लिए आज मैं देश और दुनिया के सभी investors को फिर आमंत्रित करता हूँ। ये भारत के लिए भी और दुनिया के लिए यहां से बेहतरीन ड्रोन टेक्नोलॉजी के निर्माण का सही समय है। मैं एक्सपर्ट्स से, टेक्नोलॉजी की दुनिया के लोगों से भी अपील करूंगा कि ड्रोन टेक्नोलॉजी का ज्यादा से ज्यादा विस्तार करें, उसे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक लेकर जाएं। मैं देश के सभी युवाओं से भी आह्वान करूंगा कि ड्रोन के क्षेत्र में नए स्टार्ट अप्स के लिए आगे आएँ। हम मिलकर ड्रोन टेक से सामान्य जन को empower करने में अपनी भूमिका निभाएँगे, और मुझे विश्वास है अब मैं पुलिस के काम में भी सुरक्षा की दृष्टि से ड्रोन बहुत बड़ी सेवा कर पाएगा। बड़े-बड़े जैसे कुंभ मेले जैसे अवसर होते हैं। बहुत बड़ी मात्रा में ड्रोन से मदद मिल सकती है। कहीं ट्रैफिक जाम की समस्याएं हैं, ड्रोन से सोल्यूशन निकाले जा सकते हैं। यानि इतनी आसानी से इन चीजों को उपयोग होने वाला है। हमें इन टेक्नोलॉजी के साथ अपनी व्यवस्थाओं को जोड़ना है, और जितना इन व्यवस्थाओं को साथ जुड़ेंगे। मुझे बराबर याद है, मैं आज यहां देख रहा था कि वो ड्रोन से जंगलों में पेड़ उगाने के लिए जो seeds हैं, उसकी गोली बनाकर के ऊपर से ड्रॉप करते हैं। जब ड्रोन नहीं था, तो मैंने एक प्रयोग किया था। मेरे तो सारे देसी प्रयोग होते हैं। तो उस समय तो टेक्नोलॉजी नहीं थी। मैं चाहता था, जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री था, तो जो ये हमारे कुछ पहाड़ हैं लोग वहां जाएंगे, पेड़-पैधे लगाएंगे तो जरा मुश्किल काम है आशा करना। तो मैंने क्या किया, मैंने जो गैस के गुब्बारे होते हैं, जो हवा में उड़ते हैं। मैंने गैस के गुब्बारे वालों की मदद ली और मैंने कहा कि उस गुब्बारे में seeds डाल दीजिए और ये जो पहाड़ी हैं, वहां जाकर के गुब्बारे छोड़ दीजिए, गुब्बारे जब नीचे गिरेंगे तो seeds फैल जाएंगे और जब आसमान से बारिश आएगी, अपना नसीब होगा तो उसमें से पेड़ निकल आएगा। आज ड्रोन से वो काम बड़ी आसानी से हो रहा है। जियो ट्रेकिंग हो रहा है। वो बीज कहां पर गया, उसका जियो ट्रेकिंग हो रहा है और वो बीज वृक्ष में परिवर्तित हो रहा है कि नहीं हो रहा है। उसका हिसाब-किताब किया जा सकता है। यानि एक प्रकार से मानों forest fire हम आसानी से ड्रोन की मदद से उसे मॉनिटर कर सकते हैं, एक छोटी सी भी घटना नजर आती है तो हम तुरंत एक्शन ले सकते हैं। यानि कल्पना भर की चीजें हम उसके भी द्वारा कर सकते हैं, हमारी व्यवस्थाओं को विस्तार कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि आज ये ड्रोन महोत्सव जिज्ञासा की दृष्टि से तो अनेकों के काम आएगा ही आएगा, लेकिन जो भी इसको देखेंगे जरूर कुछ नया करने के लिए सोचेंगे, जरूर उसमें परिवर्तन लाने के लिए प्रयास करेंगे, व्यवस्थाओं में जोड़ने के लिए प्रयास करेंगे और ultimately हम technology driven delivery हम बहुत तेजी से कर पाएंगे। इस विश्वास के साथ मैं फिर से एक बार आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

DS/ST/DK

(रिलीज़ आईडी: 1828730) आगंतुक पटल : 544

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Bengali , Manipuri , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय



बोपल, अहमदाबाद में आईएन-स्पेस मुख्यालय के उद्घाटन के अवसर पर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 10 JUN 2022 8:44PM by PIB Delhi

नमस्कार! केंद्र में मंत्रिमंडल के मेरे साथी और इसी क्षेत्र के सांसद केंद्र, के गृह मंत्री श्री अमित शाह, गुजरात के लोकप्रिय मृदु एवं मक्कम, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जी, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजित डोवाल जी, संसद में मेरे साथी श्री सी. आर. पाटिल, IN-SPACE के चेयरमैन पवन गोयनका जी, स्पेस विभाग के सचिव श्री एस. सोमनाथ जी, भारत की स्पेस इंडस्ट्री के सभी प्रतिनिधि, अन्य महानुभाव, देवियों और सज्जनों।

आज 21वीं सदी के आधुनिक भारत की विकास यात्रा में एक शानदार अध्याय जुड़ा है। Indian National Space Promotion and Authorization Center यानि INSPACE के हेडक्वार्टर के लिए सभी देशवासियों को और विशेष कर के Scientific Community को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आजकल हम देखते हैं कि सोशल मीडिया पर युवाओं को कुछ exciting या interesting पोस्ट करना होता है, तो उससे पहले वो अलर्ट करते हैं और अलर्ट में messaging करते हैं- 'Watch this space' भारत की स्पेस इंडस्ट्री के लिए, INSPACE का लॉन्च होना, 'Watch this space' moment की तरह ही है। INSPACE, भारत के युवाओं को, भारत के best scientific minds को अपना टेलेंट दिखाने का एक अभूतपूर्व अवसर है। चाहे वो सरकार में काम कर रहे हों या प्राइवेट सेक्टर में, INSPACE सभी के लिए बेहतरीन अवसर लेकर के आया है। INSPACE में भारत की स्पेस इंडस्ट्री में क्रांति लाने की बहुत क्षमता है और इसलिए मैं आज जरूर इस बात को कहूंगा कि 'Watch this space' INSPACE is For स्पेस, INSPACE is For पेस, INSPACE is For एस।

साथियों,

दशकों तक भारत में स्पेस सेक्टर से जुड़ी प्राइवेट इंडस्ट्री को सिर्फ vendor के तौर पर ही देखा गया। सरकार ही सारे Space missions और projects पर काम करती थी। हमारे प्राइवेट सेक्टर वाले लोगों से जरूरत के हिसाब से बस कुछ parts और equipments ले लिए जाते थे। प्राइवेट सेक्टर को सिर्फ वेंडर बना देने की वजह से उसके सामने आगे बढ़ने के रास्ते हमेशा अवरुद्ध रहे, एक दीवार खड़ी रही। जो सरकारी व्यवस्था में नहीं है, भले ही वो कोई वैज्ञानिक हो या फिर कोई युवा, वो स्पेस सेक्टर से जुड़े अपने Ideas पर काम ही नहीं कर पाते थे। और इन सबमें नुकसान किसका हो रहा था? नुकसान देश का हो रहा था। और इस बात गवाह है कि आखिर big ideas ही तो winners बनाते हैं। स्पेस सेक्टर में reform करके, उसे सारी बंदिशों से आजाद करके, INSPACE के माध्यम से प्राइवेट इंडस्ट्री को भी सपोर्ट करके देश आज winners बनाने का अभियान शुरू कर रहा है। आज प्राइवेट सेक्टर सिर्फ vendor बनकर नहीं रहेगा बल्कि स्पेस सेक्टर में big winners की भूमिका निभाएगा। भारत के सरकारी स्पेस संस्थानों का सामर्थ्य और भारत के प्राइवेट सेक्टर का पैशन जब एक साथ जुड़ेगा तो उसके लिए आसमान भी कम पड़ेगा। 'Even sky is not the limit'! जैसे भारत के IT सेक्टर का सामर्थ्य आज दुनिया देख रही है, वैसे ही आने वाले दिनों में भारत के स्पेस सेक्टर की ताकत नई ऊंचाई पर होगी। INSPACE, स्पेस इंडस्ट्री, स्टार्टअप्स और इसरो के बीच transfer of technology को भी facilitate करने का काम करेगा। प्राइवेट सेक्टर, ISRO के resources का इस्तेमाल भी कर सके, ISRO के साथ मिलकर काम कर सके, ये भी सुनिश्चित किया जा रहा है।

साथियों,

स्पेस सेक्टर में ये Reform करते समय, मेरे मन में हमेशा भारत के युवाओं का असीम सामर्थ्य रहा और अभी जिन स्टार्टअप्स में जा कर के मैं आया हूँ, बहुत छोटी आयु के नौजवान और बहुत बुलंद हौसले के साथ वो कदम आगे रख रहे हैं, उनको देखकर के, उनको सुन करके मेरा मन बड़ा प्रसन्न हो गया। मैं इन सभी नौजवानों को बधाई देता हूँ। स्पेस सेक्टर में पहले की जो व्यवस्थाएँ थीं, उसमें भारत के युवाओं को उतने मौके नहीं मिल रहे थे। देश के नौजवान, अपने साथ innovation, energy और spirit of exploration को लेकर आते हैं। उनकी risk taking capacity भी बहुत होती है। ये किसी भी देश के विकास के लिए बहुत जरूरी होता है। लेकिन अगर कोई युवा कोई इमारत बनाना चाहे तो क्या हम उसे कह सकते हैं कि सिर्फ PWD से बनवाओ। अगर कोई युवा कुछ Innovate करना चाहता है तो क्या उसे हम बोल सकते हैं कि ये काम सिर्फ government facility से ही होगा। ये सुनने में ही अजीब लगता है लेकिन हमारे देश में अलग-अलग सेक्टर्स में यही हालत थी। ये देश का दुर्भाग्य रहा कि समय के साथ Regulations और Restrictions इसके बीच में जो अंतर होता है, उसे भुला दिया गया। आज जब भारत का युवा, राष्ट्र निर्माण में ज्यादा से ज्यादा भागीदार बनना चाहता है तो हम उसके सामने ये शर्त नहीं रख सकते कि जो करना है, सरकारी रास्ते से ही करो। ऐसी शर्त का जमाना चला गया। हमारी सरकार भारत के युवाओं के सामने से हर अवरोध को हटा रही है, लगातार Reforms कर रही है। डिफेंस सेक्टर को प्राइवेट इंडस्ट्री के लिए खोल देना, आधुनिक ड्रोन पॉलिसी बनाना हो, geospatial data गाइडलाइंस बनानी हो, टेलीकॉम-आईटी सेक्टर में Work from Anywhere की सहूलियत देनी हो, सरकार हर दिशा में काम कर रही है। हमारी कोशिश है कि हम भारत के प्राइवेट सेक्टर के लिए ज्यादा से ज्यादा Ease of Doing Business का माहौल बनाएं, ताकि देश का प्राइवेट सेक्टर, देशवासियों की Ease of Living में उतनी ही मदद करे।

साथियों,

यहाँ आने से पहले अभी मैं INSPACE की Technical Lab और Clean Room भी देख रहा था। यहाँ सैटेलाइट्स के डिजाइन, फैब्रिकेशन, असेंबली, इंटीग्रेशन और टेस्टिंग के लिए आधुनिक उपकरण भारतीय कंपनियों के लिए उपलब्ध होंगे। यहां और भी कई आधुनिक facilities और infrastructure तैयार किए जाएंगे जो स्पेस इंडस्ट्री का सामर्थ्य बढ़ाने में मदद करेगा। आज मुझे प्रदर्शनी एरिया को भी देखने, स्पेस इंडस्ट्री और स्पेस स्टार्ट-अप्स के लोगों से बात करने का भी मौका मिला। मुझे याद है जब हम स्पेस सेक्टर में reforms कर रहे थे तो कुछ लोग आशंका जता रहे थे कि स्पेस इंडस्ट्री में कौन प्राइवेट प्लेयर आएगा? लेकिन आज स्पेस सेक्टर में आई, 60 से ज्यादा भारतीय प्राइवेट कंपनियाँ, आज already उसमें lead कर रही हैं और उनको देखकर के मुझे और प्रसन्नता हुई है आज। मुझे गर्व है कि हमारे प्राइवेट इंडस्ट्री के साथियों ने Launch vehicle, satellite, ground segment और space application के क्षेत्रों में तेजी से काम शुरू कर दिया है। PSLV रॉकेट के निर्माण के लिए भी भारत के प्राइवेट प्लेयर्स आगे आए हैं। इतना ही नहीं, कई प्राइवेट कंपनियों ने तो अपने खुद के रॉकेट की डिजाइन भी तैयार कर ली है। ये भारत के स्पेस सेक्टर की असीमित संभावनाओं की एक झलक है। इसके लिए मैं अपने Scientists, industrialists, युवा उद्यमियों और सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई देता हूँ और इस पूरी यात्रा में ये जो नया मोड़ आया है, एक नई ऊँचाई का रास्ता चुना है उसके लिए अगर मुझे किसी को सबसे ज्यादा बधाई देनी है, किसी को सबसे ज्यादा धन्यवाद देना है तो मेरे ISRO के लोगों को धन्यवाद देना है। हमारे ISRO के पुराने सचिव यहां बैठे हैं जिन्होंने इस बात को lead किया और अब हमारे सोमनाथ जी इसको आगे बढ़ा रहे हैं और इसलिए मैं इसकी पूरी credit मेरे इन ISRO के साथियों को दे रहा हूँ। इन साइंटिस्टों को दे रहा हूँ। ये छोटा निर्णय नहीं है दोस्तों और ये स्टार्टअप वालों को पता है कि इतने महत्वपूर्ण निर्णय के कारण वो हिन्दुस्तान को और दुनिया को क्या कुछ देने के लिए बुलंद हौसला रखते हैं और इसलिए इसकी पूरी credit ISRO को जाती है। उन्होंने इस काम में बढ़-चढ़कर के कदम उठाए हैं, चीजों को तेजी से आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने कोशिश की है और जहां अपनी ही मालिकी थी, वो कह रहे हैं नहीं आइए देश के नौजवान, ये आपका है, आप आगे बढ़िए। ये अपने आप में बहुत बड़ा क्रांतिकारी decision है।

साथियों,

इस समय हम अपनी आज़ादी के 75 साल का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। आज़ाद भारत में हमारी जिन सफलताओं ने करोड़ों देशवासियों को प्रेरणा दी, उन्हें आत्मविश्वास दिया, उनमें हमारी स्पेस उपलब्धियों का विशेष योगदान है। ISRO जब कोई रॉकेट लांच करता है, कोई अभियान अंतरिक्ष में भेजता है, तो पूरा देश उससे जुड़ जाता है, गर्व महसूस करता है। देश उसके लिए प्रार्थनाएँ करता है, और जब वो सफल होता है तो हर देशवासी आनंद, उमंग और गर्व से उसकी अभिव्यक्ति करता है और उस सफलता को हिन्दुस्तान का हर नागरिक खुद की सफलता मानता है। और अगर कहीं कुछ अन्होनी हो जाए, कुछ अकल्पनीय हो गया, तो भी देश अपने वैज्ञानिकों के साथ खड़े होकर उनका हौसला बढ़ाता है। कोई साइंटिस्ट है या किसान-मजदूर है, विज्ञान की तकनीकियों को समझता है या नहीं समझता है, इन सबसे ऊपर हमारा स्पेस मिशन देश के जन गण के

मन का मिशन बन जाता है। मिशन चंद्रयान के दौरान हमने भारत की इस भावनात्मक एकजुटता को देखा था। भारत का अन्तरिक्ष अभियान एक तरह से 'आत्मनिर्भर भारत' की सबसे बड़ी पहचान रहा है। अब जब इस अभियान को, भारत के प्राइवेट सेक्टर की ताकत मिलेगी, तो उसकी शक्ति कितनी ज्यादा बढ़ जाएगी, आप इसका अंदाजा लगा सकते हैं।

साथियों,

21वीं सदी के इस समय में आपकी-हमारी जिंदगी में हर रोज स्पेस टेक्नोलॉजी की भूमिका बढ़ती जा रही है। जितनी ज्यादा भूमिका, जितने ज्यादा Application, उतनी ही ज्यादा संभावनाएं। 21वीं सदी में स्पेस-टेक एक बड़े revolution का आधार बनने वाला है। स्पेस-टेक अब केवल दूर स्पेस की नहीं, बल्कि हमारे पर्सनल स्पेस की टेक्नालजी बनने जा रही है। सामान्य मानवी के जीवन में Space Technology की जो भूमिका है, रोजमर्रा की जिंदगी में जिस तरह Space Technology शामिल है, उसकी तरफ अक्सर ध्यान नहीं जाता। हम टीवी खोलते हैं, इतने सारे चैनल्स हमें उपलब्ध हैं। लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि ये सैटेलाइट की मदद से हो रहा है। कहीं आना-जाना हो, ये देखना हो कि ट्रैफिक है या नहीं है, Shortest रास्ता कौन सा है, ये सब किसकी मदद से हो रहा है? सैटेलाइट की मदद से हो रहा है। Urban Planning के इतने काम हैं, कहीं रोड बन रही है, कहीं ब्रिज बन रहा है, कहीं स्कूल, कहीं अस्पताल बन रहे हैं, कहीं प्राउंड वॉटर टेबल चेक करना है, इंफ्रा प्रोजेक्ट्स की मॉनीटरिंग करनी है, ये सारे काम सैटेलाइट की मदद से हो रहे हैं। हमारे जो Coastal Areas हैं, उनकी Planning के लिए, उनके Development में भी Space Technology की बड़ी भूमिका है। समुद्र में जाने वाले मछुआरों को भी सैटेलाइट के जरिए फिशिंग और समुद्री तूफानों की जानकारी पहले से ही मिल जाती है। आज बारिश के जो अनुमान आ रहे हैं और करीब-करीब सही निकल रहे हैं। उसी प्रकार से जब cyclone आता है, exact उसका fall point क्या होगा, किस दिशा में जाएगा, कितने घंटे, कितने मिनट पर वो fall करेगा, ये सारी बारिकियां सैटेलाइट की मदद से मिल रही हैं। इतना ही नहीं, एग्रीकल्चर सेक्टर में चाहे फसल बीमा योजना हो, सॉयल हेल्थ कार्ड्स का अभियान हो, सभी में स्पेस टेक्नालजी का इस्तेमाल हो रहा है। बिना Space Technology के हम आज के आधुनिक एविएशन सेक्टर की कल्पना भी नहीं कर सकते। ये सब सामान्य मानवी के जीवन से जुड़े हुए विषय हैं। भविष्य में और आपको मालूम होगा इस बार बजट में हमने टीवी के माध्यम से बच्चों को ट्यूशन देने का, पढ़ाने का एक बड़ा अभियान करने की योजना बजट में बताई है। इतना ही नहीं, जो competitive exam में जा रहे हैं और जिन बच्चों को गांव छोड़कर के बड़े शहरों में बहुत महंगी फीस देकर के ट्यूशन लेना पड़ता है, उसको भी हम ये सैटेलाइट के माध्यम से उसके घर तक उसके requirement के अनुसार syllabus तैयार करवा रहे हैं ताकि बच्चे उनको extra खर्चा न करना पड़े और गरीब का गरीब बच्चा भी अच्छे से अच्छे ट्यूशन सैटेलाइट के माध्यम से अपनी टीवी स्क्रीन पर, अपने लैपटॉप की स्क्रीन पर, अपने मोबाइल पर आसानी से प्राप्त कर सके, उस दिशा में हम जा रहे हैं।

साथियों,

भविष्य में ऐसे ही अनेक क्षेत्रों में स्पेस-टेक का इस्तेमाल ज्यादा से ज्यादा बढ़ने वाला है। हम कैसे स्पेस टेक्नालजी को सामान्य मानवी के लिए ज्यादा से ज्यादा सुलभ बना सकें, कैसे स्पेस-टेक ease of living को बढ़ाने का माध्यम बने, और, कैसे हम इस टेक्नालजी का इस्तेमाल देश के विकास और सामर्थ्य के लिए कर सकते हैं, इस दिशा में INSPACE और प्राइवेट प्लेयर्स को लगातार काम करने की जरूरत है। Geo spatial mapping से भी जुड़ी कितनी ही संभावनाएं हमारे सामने हैं। प्राइवेट सेक्टर की इनमें बहुत बड़ी भूमिका हो सकती है। हमारे पास आज सरकारी satellites का बड़ा data available है। अब आने वाले समय में प्राइवेट सेक्टर के पास भी अपना काफी डेटा होगा। डेटा की ये पूंजी आपको दुनिया में आपको बहुत बड़ी ताकत देने वाली है। इस समय दुनिया में स्पेस इंडस्ट्री का साइज़ करीब 400 billion डॉलर का है। 2040 तक इसके one trillion dollar industry बनने की संभावना पड़ी हुई है। आज हमारे पास talent भी है, experience भी है, लेकिन आज इस इंडस्ट्री में हमारा participation केवल जनभागीदारी यानी private partnership सिर्फ 2 per-cent है। हमें global space industry में अपना share बढ़ाना होगा, और इसमें हमारे प्राइवेट सेक्टर की बड़ी भूमिका है। मैं आने वाले समय में space tourism और space diplomacy के क्षेत्र में भी भारत की मजबूत भूमिका देख रहा हूँ। भारत की स्पेस कंपनियाँ ग्लोबल बनें, हमारे पास ग्लोबल स्पेस कंपनी हो, ये पूरे देश के लिए गौरव की बात होगी।

साथियों,

हमारे देश में अनंत संभावनाएं हैं, लेकिन अनंत संभावनाएं कभी भी सीमित प्रयासों से साकार नहीं हो सकतीं। मैं आपको आश्चस्त करता हूँ, देश के जवानों को आश्चस्त करता हूँ, scientific temperament वाले, risk taking capacity वाले नौजवानों को आश्चस्त करना चाहता हूँ कि स्पेस सेक्टर में reforms का ये सिलसिला आगे भी अनवरत जारी रहेगा। प्राइवेट सेक्टर की जरूरतों को सुना जाए, समझा जाए, व्यापार की संभावनाओं का आंकलन किया जाए, इसके लिए एक

मजबूत mechanism बनाया गया है। INSPACE इस दिशा में प्राइवेट सेक्टर की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक single window independent nodal agency के रूप में काम करेगा। सरकारी कंपनियों, स्पेस इंडस्ट्री, स्टार्टअप्स और institutes के बीच सामंजस्य के साथ आगे बढ़ने के लिए भारत, नई भारतीय अंतरिक्ष नीति पर भी काम कर रहा है। हम स्पेस सेक्टर में ease of doing business को बढ़ावा देने के लिए भी जल्द ही एक पॉलिसी लेकर आने वाले हैं।

साथियों,

मानवता का भविष्य, उसका विकास, आने वाले दिनों में दो ऐसे क्षेत्र हैं जो सबसे ज्यादा प्रभावी होने वाले हैं, हम जितना जल्दी उसको explore करेंगे, दुनिया की इस स्पर्धा में हम देरी किये बिना जितने आगे बढ़ेंगे, हम परिस्थितियों को lead भी कर पा सकते हैं, control भी कर सकते हैं और वो दो क्षेत्र हैं- एक है Space, दूसरा है Sea समंदर, ये बहुत बड़ी ताकत बनने वाले हैं और आज हम नीतियों के द्वारा उन सबको address करने का प्रयास कर रहे हैं और देश के नौजवानों को इसके साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। Space के लिए हमारे युवाओं में, खास करके स्टूडेंट्स में जो क्यूरोसिटी है वो भारत की स्पेस इंडस्ट्री के विकास के लिए बड़ी ताकत होती है। इसलिए हमारा प्रयास है कि देश में बनी हजारों अटल टिकरिंग लैब्स में स्टूडेंट्स को स्पेस से जुड़े विषयों से निरंतर परिचित कराया जाए, उन्हें अपडेट रखा जाए। मैं देश के स्कूलों और कॉलेजों को भी आग्रह करूंगा कि वो अपने विद्यार्थियों को Space से जुड़ी भारतीय संस्थाओं और कंपनियों के बारे में बताएं, उनकी Labs की विजिट कराएं। इस सेक्टर में जिस तरह लगातार भारतीय प्राइवेट कंपनियों की संख्या बढ़ रही है, उससे भी उन्हें मदद मिलने वाली है। आपको ध्यान होगा कि भारत में पहले, मुझे मालूम नहीं है कि ऐसा क्यों था लेकिन था, मुझे ये दायित्व मिला उसके पहले की स्थिति ये थी कि जब सैटेलाइट लॉन्च होता था तो उस पूरे क्षेत्र में किसी को एंट्री नहीं होती थी और हम जैसे जो नेता लोग होते हैं उनको VIP की तरह वहां 12-15 लोगों को invite करके दिखाया जाता था कि सैटेलाइट लॉन्च हो रहा है और हम भी बड़े उत्साह के साथ देख रहे थे। लेकिन मेरी सोच अलग है मेरा काम करने का तरीका अलग है तो मैं पहली बार वहां प्रधानमंत्री के रूप में गया तो हमने एक निर्णय किया था, हमने देखा है कि देश के छात्रों में दिलचस्पी है, curiosity है और उस बात को ध्यान में रखते हुए जहां से हमारे सैटेलाइट लॉन्च होते हैं वो श्रीहरिकोटा में हमने एक बहुत बड़ी लॉन्च देखने की, जब सैटेलाइट जाता है उसको देखने के लिए व्यू गैलरी का निर्माण किया है और कोई भी नागरिक कोई भी स्कूल का विद्यार्थी भी इस कार्यक्रम को देख सकता है और बैठने की व्यवस्था भी छोटी नहीं है। 10 हजार लोग बैठकर के इस सैटेलाइट लॉन्च को देख सकें, इसका प्रबंध किया है। चीजें छोटी लगती हैं लेकिन भारत के जीवन पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव हो रहा है।

साथियों,

INSPLACE हेडक्वार्टर का लोकार्पण आज हो रहा है, एक प्रकार से गतिविधि का केंद्र बनता जा रहा है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि गुजरात अलग-अलग सेक्टर्स में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के बड़े संस्थानों का सेंटर बनता जा रहा है। मैं भूपेंद्र भाई और उनकी पूरी टीम को, गुजरात सरकार के हमारे सभी साथियों को उनके इस initiative के लिए proactive हर नीतियों को सपोर्ट करने के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं, अभिनंदन करता हूं। और आपको मालूम है अभी कुछ सप्ताह पहले ही जामनगर में WHO के Global Centre for Traditional Medicine का काम शुरू हुआ है। राष्ट्रीय रक्षा यूनिवर्सिटी हो, National Law University हो, पंडित दीनदयाल एनर्जी यूनिवर्सिटी हो, नेशनल फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी हो, National Innovation Foundation हो, Children's University हो, कितने ही National Institutes यहां आसपास में ही हैं। Bhaskaracharya Institute for Space Applications and Geoinformatics - यानी BISAG इसकी स्थापना ने देश के अन्य राज्यों की भी प्रेरणा बन गई है। इन बड़े संस्थानों के बीच अब IN-SPACE भी इस जगह की पहचान बढ़ाएगा। मेरा देश के युवाओं से, विशेष कर गुजरात के युवाओं से आग्रह है कि वो इन बेहतरीन भारतीय संस्थाओं का पूरा लाभ उठाएं। मुझे पूरा भरोसा है, आपकी सक्रिय भूमिका से भारत स्पेस सेक्टर में नई ऊंचाई हासिल करेगा। और आज के इस शुभ अवसर पर मैं खासकर के जो प्राइवेट सेक्टर ने उत्साह के साथ भाग लिया है, जो नौजवान नए हौसले, नए संकल्पों के साथ आगे आए, उनको बधाई भी देता हूं और बहुत-बहुत शुभकामनाएं भी देता हूं। मैं ISRO के सभी वैज्ञानिकों को भी और ISRO की पूरी टीम को भी अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं, बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं। और मुझे विश्वास है Goenka private sector में बहुत सफल व्यक्तित्व रहा है, उनके नेतृत्व में INSPACE सच्चे अर्थ में जो सपना हमारा है उस सपने को पूरा करने का सामर्थ्य ले के आगे बढ़ेगा। इन्हीं अपेक्षाओं के साथ अनेक-अनेक शुभकामनाओं के साथ, मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं!

DS/TS/AV

(रिलीज़ आईडी: 1833031) आगंतुक पटल : 445

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Assamese , Bengali , Manipuri , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय



केंद्र-राज्य विज्ञान सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 10 SEP 2022 3:51PM by PIB Delhi

गुजरात के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र भाई पटेल जी, केंद्रीय मंत्रिमंडल में मेरे सहयोगी डॉक्टर जितेंद्र सिंह जी, विभिन्न राज्य सरकारों के मंत्रीगण, स्टार्टअप की दुनिया से जुड़े सभी साथियों, विद्यार्थी मित्रों, अन्य महानुभाव, देवियों और सज्जनों,

'सेंटर-स्टेट साइंस कॉन्क्लेव' इस महत्वपूर्ण समारोह में मैं आप सबका स्वागत भी करता हूँ, अभिनंदन भी करता हूँ। आज के नए भारत में 'सबका प्रयास' की जिस भावना को लेकर हम चल रहे हैं, ये आयोजन उसका एक जीवंत उदाहरण है।

साथियों,

21वीं सदी के भारत के विकास में विज्ञान उस ऊर्जा की तरह है जिसमें हर क्षेत्र के विकास को, हर राज्य के विकास को बहुत गति देने का सामर्थ्य है। आज जब भारत चौथी औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व करने की तरफ बढ़ रहा है, तो उसमें भारत की साइंस और इस क्षेत्र से जुड़े लोगों की भूमिका बहुत अहम है। ऐसे में नीति-निर्माताओं का, शासन-प्रशासन से जुड़े हम लोगों का दायित्व और बढ़ जाता है। मुझे उम्मीद है, अहमदाबाद की साइंस सिटी में हो रहा ये मंथन, आपको एक नई प्रेरणा देगा, साइंस को प्रोत्साहित करने के उत्साह से भर देगा।

साथियों,

हमारे शास्त्रों में कहा गया है - ज्ञानम् विज्ञान सहितम् यत् ज्ञात्वा मोक्ष्यसे अशुभात्।। अर्थात्, ज्ञान जब विज्ञान के साथ जुड़ता है, जब ज्ञान और विज्ञान से हमारा परिचय होता है, तो संसार की सभी समस्याओं और संकटों से मुक्ति का रास्ता अपने आप खुल जाता है। समाधान का, Solution का, Evolution का और Innovation का आधार विज्ञान ही है। इसी प्रेरणा से आज का नया भारत, जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान के साथ ही जय अनुसंधान का आह्वान करते हुए आगे बढ़ रहा है।

साथियों,

बीते समय का एक अहम पक्ष है जिसकी ओर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ। इतिहास की वो सीख, केंद्र और राज्य दोनों के लिए, भविष्य का मार्ग बनाने में बहुत सहायक होगी। अगर हम पिछली शताब्दी के शुरुआती दशकों को याद करें तो पाते हैं कि दुनिया में किस तरह तबाही और त्रासदी का दौर चल रहा था। लेकिन उस दौर में भी बात चाहे East की हो या West की, हर जगह के scientist अपनी महान खोज में लगे हुए थे। पश्चिम में Einstein, Fermi, मैक्स प्लांक, नील्स बोर, Tesla ऐसे अनेक scientist अपने प्रयोगों से दुनिया को चौंका रहे थे। उसी दौर में सी.वी. रमन, जगदीश चंद्र बोस, सत्येंद्रनाथ बोस, मेघनाद साहा, एस चंद्रशेखर जैसे अनगिनत वैज्ञानिक अपनी नई-नई खोज सामने ले करके आ रहे थे। इन सभी वैज्ञानिकों ने भविष्य को बेहतर बनाने के कई रास्ते खोल दिए। लेकिन East और West के बीच एक बड़ा अंतर ये रहा कि हमने अपने वैज्ञानिकों के काम को उतना celebrate नहीं किया, जितना किया जाना चाहिए था। इस वजह से science को लेकर हमारे समाज के एक बड़े हिस्से में उदासीनता का भाव पैदा हो गया। एक बात हमें याद रखनी चाहिए कि जब हम कला को celebrate करते हैं, तो हम और नए कलाकारों को प्रेरणा भी देते हैं, पैदा भी करते हैं। जब हम खेल को celebrate करते हैं, तो हम और नए खिलाड़ियों को प्रेरित भी करते हैं, पैदा भी करते हैं। उसी तरह, जब हम अपने वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को celebrate करते हैं तो science हमारे समाज का स्वाभाविक हिस्सा बन जाती है, वो part of culture बन जाती है। इसलिए आज सबसे पहला आग्रह मेरा यही है, आप सभी राज्यों से आए हुए लोग हैं, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि हम अपने देश के वैज्ञानिकों की उपलब्धियों को जमकर के celebrate करें, उनका गौरवगान करें, उनका महिमामंडन करें।

कदम-कदम पर हमारे देश के वैज्ञानिक हमें अपनी खोज के द्वारा इसका अवसर भी दे रहे हैं। आप सोचिए, आज भारत अगर कोरोना की वैक्सीन विकसित कर सका है, 200 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन डोज लगा सका है, तो उसके पीछे हमारे वैज्ञानिकों की कितनी बड़ी ताकत है। ऐसे ही आज हर क्षेत्र में भारत के वैज्ञानिक कमाल कर रहे हैं। भारत के वैज्ञानिकों की हर छोटी-बड़ी उपलब्धि को सेलिब्रेट करने से देश में साइंस के प्रति जो रुझान पैदा होगा, वो इस अमृतकाल में हमारी बहुत मदद करेगा।

साथियों,

मुझे खुशी है कि हमारी सरकार Science Based Development की सोच के साथ आगे बढ़ रही है। 2014 के बाद से साइंस और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में investment में भी काफी वृद्धि की गई है। सरकार के प्रयासों से आज भारत Global Innovation Index में **छियालीसवें** स्थान पर है, जबकि 2015 में भारत **इक्यासी** नंबर पर था। इतने कम समय में हम 81 से 46 तक आए हैं, लेकिन यहां रुकना नहीं है, अभी और ऊपर जाना है। आज भारत में रिकॉर्ड संख्या में पेटेंट हो रहे हैं, नए-नए इनोवेशन हो रहे हैं। आप भी देख रहे हैं कि आज इस **कॉन्क्लेव** में इतने सारे स्टार्ट-अप्स, साइंस के सेक्टर से हमारे यहां आए हैं। देश में startups की लहर बता रही है कि बदलाव कितनी तेजी से आ रहा है।

साथियों,

आज की युवा पीढ़ी के DNA में ही साइंस टेक्नोलॉजी और इनोवेशन उसके प्रति रुझान है। वो बहुत तेजी से टेक्नोलॉजी को adapt करता है। हमें इस युवा पीढ़ी को पूरी शक्ति से सपोर्ट करना है। आज के नए भारत में युवा पीढ़ी के लिए रिसर्च और इनोवेशन के क्षेत्र में नए सेक्टर बन रहे हैं, नए सेक्टर खुल रहे हैं। स्पेस मिशन हो, Deep Ocean mission हो, National Super Computing Mission हो, सेमीकंडक्टर मिशन हो, मिशन हाइड्रोजन हो, ड्रोन टेक्नोलॉजी हो, ऐसे अनेक अभियानों पर तेज़ी से काम चल रहा है। नई National Education Policy में भी इस बात पर खास जोर दिया गया है कि विद्यार्थी को उसकी मातृभाषा में Science और technology की शिक्षा उपलब्ध हो सके।

साथियों,

इस अमृतकाल में भारत को रिसर्च और इनोवेशन का ग्लोबल सेंटर बनाने के लिए हम सबने एक साथ मिलकर के अनेक मोर्चों पर काम करना है। अपनी साइंस और टेक्नोलॉजी से जुड़ी रिसर्च को हमें लोकल स्तर पर लेकर जाना है। आज समय की मांग है कि हर राज्य अपनी स्थानीय समस्याओं के हिसाब से स्थानीय समाधान तैयार करने के लिए इनोवेशन पर बल दें। अब जैसे कंस्ट्रक्शन का ही उदाहरण लीजिए। जो टेक्नोलॉजी हिमालय के क्षेत्रों में उपयुक्त है, वो ज़रूरी नहीं है कि पश्चिमी घाट में भी उतनी ही प्रभावी हो। रेगिस्तान की अपनी चुनौतियां हैं तो तटीय इलाकों की अपनी ही समस्याएं हैं। इसलिए आज हम affordable housing के लिए light house projects पर काम कर रहे हैं, जिनमें कई तकनीकों को उपयोग हो रहा है, उसको आज़माया जा रहा है। इसी प्रकार climate resilience crops, उसको लेकर भी हम जितना लोकल होंगे, उतने ही बेहतर समाधान दे पाएंगे। हमारे शहरों से निकलने वाला जो Waste Product है, उसकी री-साइकिलिंग में, सर्कुलर इकोनॉमी में भी साइंस की बड़ी भूमिका है। ऐसी हर चुनौती से निपटने के लिए ये आवश्यक है कि हर राज्य Science-Innovation और Technology से जुड़ी आधुनिक पॉलिसी का निर्माण करे, उस पर अमल करे।

साथियों,

सरकार के तौर पर हमें अपने scientists के साथ ज्यादा से ज्यादा cooperate और collaborate करना होगा, इसी से देश में scientific modernity का माहौल बढ़ेगा। Innovation को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकारों को ज्यादा से ज्यादा वैज्ञानिक संस्थानों के निर्माण पर और प्रक्रियाओं को सरल करने पर बल देना चाहिए। राज्यों में जो उच्च शिक्षा के संस्थान हैं, उनमें innovation labs की संख्या भी बढ़ाई जानी चाहिए। आजकल hyper-specialisation का दौर चल रहा है। राज्यों में अंतरराष्ट्रीय स्तर की specialist laboratories की स्थापना की जा रही है, उसकी आवश्यकता भी बहुत है। इसमें केंद्र के स्तर पर, राष्ट्रीय संस्थानों की expertise के स्तर पर राज्यों ही हर तरह से मदद के लिए हमारी सरकार तत्पर है। स्कूलों में साइंस की आधुनिक लैब्स के साथ-साथ अटल टिंकरिंग लैब्स के निर्माण के अभियान को भी हमें तेज़ करना है।

साथियों,

राज्यों में, राष्ट्रीय स्तर के अनेक वैज्ञानिक संस्थान होते हैं, national laboratories भी होती हैं। इनके सामर्थ्य का लाभ, इनकी expertise का पूरा लाभ भी राज्यों को उठाना चाहिए। हमें अपने साइंस से जुड़े संस्थानों को Silos की स्थिति से भी बाहर निकालना होगा। राज्य के सामर्थ्य और संसाधनों के बेहतर इस्तेमाल के लिए सभी वैज्ञानिक संस्थानों का Optimum

Utilization उतना ही आवश्यक है। आपको अपने राज्य में ऐसे कार्यक्रमों की संख्या में भी वृद्धि करनी चाहिए, जो ग्रासरूट लेवल पर साइंस और टेक्नोलॉजी को लेकर हम सबको आगे बढ़ाते हैं। लेकिन इसमें भी हमें एक बात का ध्यान रखना है। अब जैसे कई राज्यों में साइंस फेस्टिवल होता है। लेकिन ये भी सच है कि उसमें बहुत सारे स्कूल हिस्सा ही नहीं लेते हैं। हमें इसके कारणों पर काम करना चाहिए, ज्यादा से ज्यादा स्कूलों को साइंस फेस्टिवल का हिस्सा बनाना चाहिए। आप सभी मंत्री साथियों को मेरा ये भी सुझाव है कि अपने राज्य के साथ ही दूसरे राज्यों के 'साइंस करिकुलम' पर भी बारीक नजर रखें। दूसरे राज्यों में जो कुछ अच्छा है, उसे आप अपने यहां दोहरा सकते हैं। देश में साइंस को बढ़ावा देने के लिए हर राज्य में साइंस और टेक्नोलॉजी से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण भी उतना ही आवश्यक है।

साथियों,

भारत का रिसर्च और इनोवेशन इकोसिस्टम, दुनिया में श्रेष्ठ हो, अमृतकाल में हमें इसके लिए पूरी ईमानदारी के साथ जुटना है। इस दिशा में ये कॉन्क्लेव, सार्थक और समयबद्ध समाधानों के साथ सामने आएंगी, इसी शुभकामना के साथ आप सभी का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं और मुझे विश्वास है कि आपके इस मंथन से विज्ञान की गति-प्रगति में नए आयाम जुड़ेंगे, नए संकल्प जुड़ेंगे और हम सब मिलकर के आने वाले दिनों में जो हमारे सामने अवसर है, उस अवसर को गंवाने नहीं देंगे, किसी भी हालत में वो अवसर जाना नहीं चाहिए। बड़े मूल्यवान 25 साल हमारे पास हैं। ये 25 साल हैं जो विश्व में भारत की एक नई पहचान, नई ताकत, नया सामर्थ्य के साथ भारत को खड़ा कर देगा। और इसलिए साथियों, आपका ये समय सच्चे अर्थ में आपके राज्य के विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में बल देने वाला बनना चाहिए। मुझे विश्वास है आप इस मंथन से वो अमृत निकाल करके जाएंगे जो अमृत आपके अपने-अपने राज्य में अनेक अनुसंधानों के साथ देश की प्रगति में जुड़ेगा। बहुत-बहुत शुभकामनाएं! बहुत-बहुत धन्यवाद!

DS/VJ/AV/AK

(रिलीज आईडी: 1858364) आगंतुक पटल : 601

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Bengali , English , Urdu , Marathi , Assamese , Manipuri , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय



इंडिया मोबाइल कांग्रेस में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ और भारत में 5जी सेवाओं का शुभारंभ

प्रविष्टि तिथि: 01 OCT 2022 5:30PM by PIB Delhi

इस ऐतिहासिक अवसर पर उपस्थित मंत्रिमंडल के मेरे सहयोगीगण, देश के उद्योगजगत के प्रतिनिधिगण, अन्य महानुभाव, देवियों और सज्जनों,

ये समिट तो ग्लोबल है लेकिन आवाज लोकल है। इतना ही नहीं आगाज भी लोकल है। आज 21वीं सदी के विकसित होते भारत के सामर्थ्य का, उस सामर्थ्य को देखने का, उसके प्रदर्शन का एक विशेष दिवस है। आजादी के अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक कालखंड में एक अक्टूबर 2022, ये तारीख इतिहास में दर्ज होने वाली है। दूसरा ये नवरात्र का पर्व चल रहा है। शक्ति उपासना का पर्व होता है और 21वीं सदी की जो सबसे बड़ी शक्ति है उस शक्ति को नई ऊंचाई पर ले जाने का आज भी आरंभ हो रहा है। आज देश की ओर से, देश की टेलीकॉम इंडस्ट्री की ओर से, 130 करोड़ भारतवासियों को 5G के तौर पर एक शानदार उपहार मिल रहा है। 5G, देश के द्वार पर नए दौर की दस्तक लेके आया है। 5G, अवसरों के अनंत आकाश की शुरुआत है। मैं प्रत्येक भारतवासी को इसके लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियों,

मैं गौरव से भरे इन क्षणों के साथ ही, मुझे खुशी इस बात की भी है कि 5G की शुरुआत में ग्रामीण स्कूलों के बच्चे भी हमारे साथ सहभागी हैं, गाँव भी सहभागी हैं, मजदूर-गरीब भी सहभागी हैं। अभी मैं यूपी के एक ग्रामीण स्कूल की बेटी 5G होलोग्राम टेक्नालजी के जरिए खूब हो रहा था। जब मैं 2012 के चुनाव में होलोग्राम लेकर के चुनाव प्रसार कर रहा था तो दुनिया के लिए अजूबा था। आज वो घर-घर पहुंच रहा है। मैंने महसूस किया कि नई तकनीक उनके लिए किस तरह पढ़ाई के मायने बदलते जा रही है। इसी तरह, गुजरात, महाराष्ट्र और ओड़िशा के गाँवों के सुदूर स्कूल तक, 5G के जरिए बच्चे बड़े-बड़े विशेषज्ञों के साथ क्लास में नई-नई चीजें सीख रहे हैं। उनके साथ नए दौर की क्लास का हिस्सा बनना, ये वाकई बहुत रोमांचित करने वाला अनुभव है।

साथियों,

5G को लेकर भारत के प्रयासों का एक और संदेश है। नया भारत, टेक्नालजी का सिर्फ consumer बनकर नहीं रहेगा बल्कि भारत उस टेक्नालजी के विकास में, उसके implementation में बहुत बड़ी active भूमिका निभाएगा। भविष्य की wireless टेक्नालजी को design करने में, उस से जुड़ी manufacturing में भारत की बड़ी भूमिका होगी। 2G, 3G, 4G के समय भारत टेक्नालजी के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहा। लेकिन 5G के साथ भारत ने नया इतिहास रच दिया है। 5G के साथ भारत पहली बार टेलीकॉम टेक्नालजी में global standard तय कर रहा है। भारत लीड कर रहा है। आज इन्टरनेट का इस्तेमाल करने वाला हर व्यक्ति इस बात को समझ रहा है कि 5G, Internet का पूरा आर्किटेक्चर बदल कर रख देगा। इसलिए भारत के युवाओं के लिए आज 5G बहुत बड़ी opportunity लेकर आया है। मुझे खुशी है कि विकसित भारत का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा हमारा देश, दुनिया के अन्य देशों के साथ किस तरह कदम से कदम मिलाकर चल रहा है। ये भारत की बहुत बड़ी सफलता है, डिजिटल इंडिया अभियान की बहुत बड़ी सफलता है।

साथियों,

जब हम डिजिटल इंडिया की बात करते हैं तो कुछ लोग समझते हैं कि ये सिर्फ एक सरकारी योजना है। लेकिन डिजिटल इंडिया सिर्फ एक नाम नहीं है, ये देश के विकास का बहुत बड़ा विजन है। इस विजन का लक्ष्य है उस टेक्नॉलजी को आम लोगों तक पहुंचाना, जो लोगों के लिए काम करे और लोगों के साथ जुड़कर काम करे। मुझे याद है, जब मोबाइल सेक्टर से जुड़े इस विजन के लिए strategy बनाई जा रही थी, तो मैंने कहा था कि हमारी अप्रोच टुकड़ों-टुकड़ों में नहीं होनी चाहिए, बल्कि holistic होनी चाहिए। डिजिटल इंडिया की सफलता के लिए जरूरी था कि वो इस सेक्टर के सभी आयामों को एक साथ कवर करे। इसलिए हमने 4 Pillars पर और चार दिशाओं में एक साथ फोकस किया। पहला - डिवाइस की कीमत, दूसरा - डिजिटल कनेक्टिविटी, तीसरा - डेटा की कीमत, चौथा और जो सबसे जरूरी है - 'digital first' की सोच।

साथियों,

जब हम पहले पिलर की बात करते हैं, डिवाइस की कीमत की बात करते हैं, तो एक बात बहुत स्पष्ट है। डिवाइस की कीमत तभी कम हो सकती है जब हम आत्मनिर्भर हों, और आपको याद होगा बहुत लोगों ने आत्मनिर्भर की मेरी बात की मजाक उड़ाई थी। 2014 तक, हम करीब 100 प्रतिशत मोबाइल फोन आयात करते थे, विदेशों से इम्पोर्ट करते थे, और इसलिए, हमने तय किया कि हम इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेंगे। हमने mobile manufacturing units को बढ़ाया। 2014 में जहां देश में सिर्फ 2 mobile manufacturing units थी, 8 साल पहले 2, अब उनकी संख्या 200 के ऊपर है। हमने भारत में मोबाइल फोन के उत्पादन को बढ़ाने के लिए incentive दिए, प्राइवेट सेक्टर को प्रोत्साहित किया। आज इसी योजना का विस्तार आप PLI scheme में भी देख रहे हैं। इन प्रयासों का नतीजा बहुत पॉजिटिव रहा। आज भारत, मोबाइल फोन उत्पादन करने में दुनिया में नंबर 2 पर है। इतना ही नहीं जो कल तक हम मोबाइल इम्पोर्ट करते थे। आज हम मोबाइल एक्सपोर्ट कर रहे हैं। दुनिया को भेज रहे हैं। जरा सोचिए, 2014 में जीरो मोबाइल फोन निर्यात करने से लेकर आज हम हजारों करोड़ के मोबाइल फोन निर्यात करने वाले देश बन गये हैं, एक्सपोर्ट करने वाले देश बन चुके हैं। स्वाभाविक है इन सारे प्रयासों का प्रभाव डिवाइस की कीमत पर पड़ा है। अब कम कीमत पर हमें ज्यादा फीचर्स भी मिलने लगे हैं।

साथियों,

डिवाइस Cost के बाद जो दूसरे पिलर पर हमने काम किया, वो है डिजिटल कनेक्टिविटी का। आप भी जानते हैं कि कम्युनिकेशन सेक्टर की असली ताकत कनेक्टिविटी में है। जितने ज्यादा लोग कनेक्ट होंगे, इस सेक्टर के लिए उतना अच्छा है। अगर हम ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी की बात करें, तो 2014 में 6 करोड़ यूजर्स थे। आज इनकी संख्या बढ़कर 80 करोड़ से ज्यादा हो चुकी है। अगर हम इंटरनेट कनेक्शन की संख्या की बात करें, तो 2014 में जहां 25 करोड़ इंटरनेट कनेक्शन थे, वहीं आज इसकी संख्या करीब-करीब 85 करोड़ पहुंच रही है। ये बात भी नोट करने वाली है कि आज शहरों में इंटरनेट यूजर्स की संख्या के मुकाबले हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट यूजर्स की संख्या तेजी से बढ़ रही है। और इसकी एक खास वजह है। 2014 में जहां देश में 100 से भी कम पंचायतों तक ऑप्टिकल फाइबर पहुंचा था, आज एक लाख 70 हजार से भी ज्यादा पंचायतों तक ऑप्टिकल फाइबर पहुंच चुका है। अब कहां 100, कहां एक लाख 70 हजार। जैसे सरकार ने घर-घर बिजली पहुंचाने की मुहिम शुरू की, जैसे हर घर जल अभियान के जरिए हर किसी तक साफ पानी पहुंचाने के मिशन पर काम किया, जैसे उज्जवला योजना के जरिए गरीब से गरीब आदमी के घर में भी गैस सिलेंडर पहुंचाया, जैसे हमने करोड़ों की तादाद में लोग बैंक अकाउंट से वंचित थे। करोड़ों लोग जो बैंक से नहीं जुड़े थे। आजादी के इतने साल के बाद जनधन एकाउंट के द्वारा हिन्दुस्तान के नागरिकों को बैंक के साथ जोड़ दिया। वैसे ही हमारी सरकार, Internet for all के लक्ष्य पर काम कर रही है।

साथियों,

Digital connectivity बढ़ने के साथ ही डेटा की कीमत भी उतनी ही अहम हो जाती है। ये डिजिटल इंडिया का तीसरा पिलर था, जिस पर हमने पूरी शक्ति से काम किया। हमने टेलीकॉम सेक्टर के रास्ते में आने वाली तमाम अड़चनों को हटाया। पहले विजन की कमी और पारदर्शिता के अभाव में टेलीकॉम सेक्टर को तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। आप परिचित हैं

कि कैसे हमने 4G तकनीक के विस्तार के लिए policy support दिया। इससे डेटा की कीमत में भारी कमी आई और देश में डेटा क्रांति का जन्म हुआ। देखते ही देखते ये तीनों फैक्टर, डिवाइस की कीमत, डिजिटल कनेक्टिविटी और डेटा की कीमत – इसका Multiplier Effect हर तरफ नजर आने लगा।

लेकिन साथियों,

इन सबके साथ एक और महत्वपूर्ण काम हुआ। देश में 'digital first' की सोच विकसित हुई। एक वक्त था जब बड़े-बड़े विद्वान इलीट क्लास, उसके कुछ मुट्ठी भर लोग, सदन के कुछ भाषण देख लेना, कैसे-कैसे भाषण हमारे नेता लोग करते हैं। वे मजाक उड़ाते थे। उनको लगता था कि गरीब लोगों में क्षमता ही नहीं है, ये डिजिटल समझ ही नहीं सकते, संदेह करते थे। उन्हें शक था कि गरीब लोग डिजिटल का मतलब भी नहीं समझ पाएंगे। लेकिन मुझे देश के सामान्य मानवी की समझ पर, उसके विवेक पर, उसके जिज्ञासु मन पर हमेशा भरोसा रहा है। मैंने देखा है कि भारत का गरीब से गरीब व्यक्ति भी नई तकनीकों को अपनाने में आगे रहता है और मैं एक छोटा अनुभव बताता हूँ। शायद ये 2007-08 का कालखंड होगा या 2009-10 का मुझे याद नहीं है। मैं गुजरात में मुख्यमंत्री रहा लेकिन एक क्षेत्र ऐसा रहा जहां मैं कभी गया नहीं और बहुत ही Tribal इलाके में, बहुत ही पिछड़ा, मैं हमारे सरकार के अधिकारियों ने भी मुझे एक बार वहां कार्यक्रम करना ही करना है, मुझे जाना है। तो वो इलाका ऐसा था कोई-कोई बड़ा प्रोजेक्ट की संभावना नहीं थी, फॉरेस्ट लैंड थी, कोई संभावना रही थी। तो आखिर में एक चिलिंग सेंटर, दूध का चिलिंग सेंटर वो भी 25 लाख रुपये का। मैंने कहा भले वो 25 लाख का होगा, 25 हजार का होगा मैं खुद उद्धाटन करूंगा। अब लोगों को लगता है ना भई चीफ मिनिस्टर को इससे नीचे तो करना नहीं चाहिए। लेकिन मुझे ऐसा कुछ होता नहीं है। तो मैं उस गांव में गया और जब वहां मैं एक पब्लिक मीटिंग करने के लिए भी जगह नहीं थी तो वहां से 4 किलोमीटर दूर स्कूल का छोटा सा मैदान था। वहां पब्लिक मीटिंग आर्गनाइज की गई। लेकिन जब वो चिलिंग सेंटर पर गया मैं तो आदिवासी माताएं-बहनें दूध भरने के लिए कतार में खड़ी थीं। तो दूध का अपना बर्तन नीचे रखकर के जब हम लोग गए और उसकी उद्धाटन की विधि कर रहे थे तो मोबाइल से फोटो ले रही थीं। मैं हैरान था इतने दूर-दराज के क्षेत्र में मोबाइल से फोटो ले रही है तो मैं उनके पास गया। मैंने कहा ये फोटो लेकर क्या करोगी? तो बोली डाउनलोड करेंगे। ये शब्द सुनकर के मैं सचमुच में surprise हुआ था। कि ये ताकत है हमारे देश के गांव में। आदिवासी क्षेत्र की गरीब माताएं-बहनें जो दूध भरने आई थीं वो मोबाइल फोन से अपनी फोटो ले रही थीं और उनको ये मालूम था कि इसमें तो नहीं अब डाउनलोड करवा देंगे और डाउनलोड शब्द उनके मुह से निकलना ये उनकी समझ शक्ति और नई चीजों को स्वीकारने के स्वभाव का परिचय देती है। मैं कल गुजरात में था तो मैं अम्बा जी तीर्थ क्षेत्र पर जा रहा था तो रास्ते में छोटे-छोटे गांव थे। आधे से अधिक लोग ऐसे होंगे जो मोबाइल से वीडियो उतार रहे थे। आधे से अधिक, यानि हमारे देश की जो ये ताकत है इस ताकत को हम नजरअंदाज नहीं कर सकते और सिर्फ देश के इलीट क्लास के कुछ लोगों को ही हमारे गरीब भाई-बहनों पर यकीन नहीं था। आखिरकार हम 'digital first' के अप्रोच के साथ आगे बढ़ने में कामयाब हुए। सरकार ने खुद आगे बढ़कर digital payments का रास्ता आसान बनाया। सरकार ने खुद ऐप के जरिए citizen-centric delivery service को बढ़ावा दिया है। बात चाहे किसानों की हो, या छोटे दुकानदारों की, हमने उन्हें ऐप के जरिए रोज की जरूरतें पूरी करने का रास्ता दिया। इसका नतीजा आज आप देख सकते हैं। आज टेक्नॉलजी सही मायने में democratic हो गई है, लोकतांत्रिक हो गई है। आपने भी देखा है कि 'digital first' की हमारी अप्रोच ने कोरोना वैश्विक महामारी के इस दौर में देश के लोगों की कितनी मदद की। दुनिया के बड़े-बड़े विकसित देश जब अपने नागरिकों की मदद करने में संघर्ष कर रहे थे। खजाने में रुपये पड़े थे, डॉलर थे, पाउंड थे, सब था, यूरो था और देने का तय भी किया था। लेकिन पहुंचाने का रास्ता नहीं था। भारत एक क्लिक पर हजारों करोड़ रुपये मेरे देश के नागरिकों के खाते में ट्रांसफर कर रहा था। ये डिजिटल इंडिया की ही ताकत थी कि जब दुनिया थमी हुई थी, तो भी हमारे बच्चे ऑनलाइन क्लासेस ले रहे थे, पढ़ाई कर रहे थे। अस्पतालों के सामने असाधारण चुनौती थी, लेकिन डॉक्टर्स अपने मरीजों का इलाज टेली-मेडिसिन के जरिए भी कर रहे थे। ऑफिस बंद थे, लेकिन 'work from home' चल रहा था। आज हमारे छोटे व्यापारी हों, छोटे उद्यमी हों, लोकल कलाकार हों, कारीगर हों, डिजिटल इंडिया ने सबको मंच दिया है, बाजार दिया है। आज आप किसी लोकल मार्केट में आप सब्जी मंडी में जाकर देखिए, रेहड़ी-पटरी वाला छोटा दुकानदार भी आपसे कहेगा, कैश नहीं है 'UPI' कर दीजिए। मैंने तो बीच में एक वीडियो देखा कोई भिक्षुक भी digitally payment लेता है। Transparency देखिए, ये बदलाव बताता है कि जब सुविधा सुलभ होती है तो सोच किस तरह सशक्त हो जाती है।

साथियों,

आज टेलीकॉम सेक्टर में जो क्रांति देश देख रहा है, वो इस बात का सबूत है कि अगर सरकार सही नीयत से काम करे, तो नागरिकों की नियत बदलने में देर नहीं लगती है। 2जी की नीयत और 5जी की नियत में यही फर्क है। देर आए दुर्लभ आए। भारत आज दुनिया के उन देशों में है जहां डेटा इतना सस्ता है। पहले 1GB डेटा की कीमत जहां 300 रुपए के करीब होती थीं, वहीं आज 1GB डेटा का खर्च केवल 10 रुपए तक आ गया है। आज भारत में महीने भर में एक व्यक्ति मोबाइल पर करीब-करीब एवरेज 14 GB डेटा इस्तेमाल कर रहा है। 2014 में इस 14 GB डेटा की कीमत होती थी करीब-करीब 4200 रुपए प्रति महीना। आज इतना ही डेटा वो सौ रुपए, या ज्यादा से ज्यादा डेढ़ सौ रुपए, सवा सौ या डेढ़ सौ रुपये में मिल जाता है। यानि आज गरीब के, मध्यम वर्ग के मोबाइल डेटा के करीब करीब 4 हजार रुपए हर महीने बच रहा है उसकी जेब में। हमारी सरकार के इतने सारे प्रयासों से भारत में डेटा की कीमत बहुत कम बनी हुई है। ये बात अलग है 4000 रुपया बचना कोई छोटी बात नहीं है हर महीना लेकिन जब मैं बता रहा हूं तब आपको ध्यान में आया क्योंकि हमने इसका हो-हल्ला नहीं किया, विज्ञापन नहीं दिए, झूठे-झूठे बड़े गपगोले नहीं चलाए, हमने फोकस किया कि देश के लोगों की सहूलियत बढ़े, Ease of Living बढ़े।

साथियों,

अक्सर ये कहा जाता है कि भारत पहली तीन औद्योगिक क्रांतियों का लाभ नहीं उठा पाया। लेकिन मेरा विश्वास है कि भारत ना सिर्फ चौथी औद्योगिक क्रांति का पूरा लाभ उठाएगा बल्कि उसका नेतृत्व भी करेगा और विद्वान लोग तो कहने भी लगे हैं कि भारत का दशक नहीं ये भारत की शताब्दी है। ये decade नहीं century है। भारत ने किस तरह 4G आने के बाद टेक्नॉलजी की दुनिया में ऊंचाई छलांग लगाई है, इसके हम सभी साक्षी हैं। भारत के नागरिकों को जब टेक्नॉलजी के समान अवसर मिल जाते हैं, तो दुनिया में उन्हें कोई पछाड़ नहीं सकता। इसलिए आज जब भारत में 5जी का लॉन्च हो रहा है, तो मैं बहुत विश्वास से भरा हुआ हूँ दोस्तों। मैं दूर का देख पा रहा हूँ और जो सपने हमारे दिल दिमाग में चल रहे हैं। उसको अपनी आंखों के सामने हम साकार होते देखेंगे। हमारे बाद वाली पीढ़ी ये देखेगी ऐसा काम होने वाला नहीं है हम ही हमारे आंखों के सामने देखने वाले हैं। ये एक सुखद संयोग है कि कुछ सप्ताह पहले ही भारत विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। और इसलिए, ये अवसर है हमारे युवाओं के लिए, जो 5 जी टेक्नॉलजी की मदद से दुनिया भर का ध्यान खींचने वाले Innovations कर सकते हैं। ये अवसर है हमारे entrepreneurs के लिए जो 5 जी टेक्नॉलजी का इस्तेमाल करते हुए अपना विस्तार कर सकते हैं। ये अवसर है भारत के सामान्य मानवी के लिए जो इस टेक्नॉलजी का इस्तेमाल करते हुए अपनी skill को सुधार सकता है, up skill कर सकता है, Re-skill कर सकता है, अपने ideas को सच्चाई में बदल सकता है।

साथियों,

आज का ये ऐतिहासिक अवसर एक राष्ट्र के तौर पर, भारत के एक नागरिक के तौर पर हमारे लिए नई प्रेरणा लेकर आया है। क्यों ना हम इस 5जी टेक्नॉलजी का उपयोग करके भारत के विकास को अभूतपूर्व गति दें? क्यों ना हम इस 5 जी टेक्नॉलजी का इस्तेमाल करके अपनी अर्थव्यवस्था को बहुत तेजी से विस्तार दें? क्यों ना हम इस 5 जी टेक्नॉलजी का इस्तेमाल करके अपनी Productivity में रिकॉर्ड वृद्धि करें?

साथियों,

इन सवालियों में हर भारतीय के लिए एक अवसर है, एक चुनौती है, एक सपना है और एक संकल्प भी है। मुझे पता है कि आज 5G की इस launching को जो वर्ग सबसे ज्यादा उत्साह से देख रहा है, वो मेरा युवा साथी है, मेरे देश की युवा पीढ़ी है। हमारी टेलीकॉम इंडस्ट्री के लिए भी कितने ही बड़े अवसर इंतज़ार कर रहे हैं, रोजगार के कितने ही नए अवसर बनने जा रहे हैं। मुझे विश्वास है, हमारी इंडस्ट्री, हमारे इंस्टीट्यूट्स और हमारे युवा मिलकर इस दिशा में निरंतर काम करेंगे और अभी जब मैं काफी समय पूरा जो exhibition लगा है तो समझने का प्रयास करता था। मैं कोई टेक्नोलॉजी का विद्यार्थी तो नहीं हूँ। लेकिन समझने की कोशिश कर रहा था। ये देखकर के मुझे लगा है कि मैं सरकार में तो सूचना करने वाला हूँ। कि हमारी सरकार के सभी विभाग, उसके सारे अधिकारी जरा देखें कहां कहां इसका उपयोग हो सकता है। ताकि सरकार की नीतियों में भी इसका असर नजर आना चाहिए। मैं देश के स्टूडेंट्स को भी चाहूंगा कि पांच दिन तक ये exhibition चलने वाला है। मैं खासकर के टेक्नोलॉजी से जुड़े स्टूडेंट्स से आग्रह करूंगा कि आप आइये, इसे देखिए, समझिए और कैसे दुनिया बदल रही है

और आप एक बार देखेंगे तो अनेक चीजें नई आपके भी ध्यान में आएंगी। आप उसमें जोड़ सकते हैं और मैं इस टेलिकॉम सेक्टर के लोगों से भी कहना चाहूंगा मुझे खुशी होती थी, जिस-जिस स्टॉल में मैं गया हर कोई कहता था ये Indigenous है, आत्मनिर्भर है, ये हमने बनाया है। सब बड़ गर्व से कहते थे। मुझे आनंद हुआ लेकिन मेरा दिमाग कुछ और चल रहा था मैं ये सोच रहा था जैसे कई प्रकार की कार आती हैं। हरेक की अपनी एक ब्रांड होती है। हरेक की अपनी विशेषता भी होती है। लेकिन उसमें जो स्पेयर पार्ट पहुंचाने वाले होते हैं। वो एमएसएमई सेक्टर के होते हैं और एक ही एमएसएमई के ये फैक्ट्री वाला छह प्रकार की गाड़ियों के स्पेयर पार्ट बनाता है, छोटे-मोटे जो भी सुधार करने करे वो देता है। मैं चाहता हूं कि आज हार्डवेयर भी आप लगा रहे ऐसा लगा मुझे आपकी बातों से। क्या एमएसएमई सेक्टर को इसके लिए जो हार्डवेयर की जरूरत है उसके छोटे-छोटे पूर्ण बनाने के लिए उनको काम दिया जाए। बहुत बड़ा इकोसिस्टम बनाया जाए। एक दम से मैं व्यापारी तो नहीं हूं। मुझे रुपयों पैसों से लेना देना नहीं है लेकिन मैं इतना समझता हूं कि कोस्ट एक दम कम हो जाएगी, एक दम कम हो जाएगी। हमारे एमएसएमई सेक्टर की ये ताकत है और वो सप्लाई आपको सिर्फ अपने यूनिकनेस के साथ उसमें सॉफ्टवेयर वगैरह जोड़कर के सर्विस देनी है और इसलिए मैं समझता हूं कि आप सब मिलकर के एक नया और मिलकर के करना पड़ेगा और तभी जाकर के इसकी कोस्ट हम नीचे ला सकते हैं। बहुत से काम हैं हम मिलकर के करते ही हैं। तो मैं जरूर इस क्षेत्र के लोगों से भी कहूंगा। मैंने ये भी देखा है कि स्टार्टअप में जिन बच्चों ने काम किया है, जिन नौजवानों ने काम किया है। ज्यादातर इस क्षेत्र में उन्हीं स्टार्टअप को ऑन कर करके उसको स्किलअप किया गया है। मैं स्टार्टअप वाले साथियों को भी कहता हूं। कि आपके लिए भी इस क्षेत्र में कितनी सेवाएं अधिकतम आप दे सकते हैं। कितनी user friendly व्यवस्थाओं को विकसित कर सकते हैं। आखिरकार इसका फायदा यही है। लेकिन एक और चीज मैं चाहूंगा। ये भी आपका जो एसोशिएशन है वो मिलकर के एक मूवमेंट चला सकता है क्या? Atleast हिन्दुस्तान के सभी district headquarter में ये 5जी जीवन में कैसे उपयोगी हो सकता है। उसके लोगों को एजुकेट करने वाले exhibition उसकी व्यवस्था हो सकती है क्या? मेरा अनुभव है छोटा सा उदाहरण बताता हूं। हमारे देश में 24 घंटे बिजली ये सपना था। मैं गुजरात में जब था तो मैंने एक योजना बनाई ज्योतिग्राम योजना और मेरा सपना था कि मैं गुजरात के हर घर में 24x7 बिजली दूंगा। अब मेरे सारे अफसर कहते थे शायद संभव ही नहीं है, ये तो हम कर ही नहीं सकते हैं। तो मैंने एक सिम्पल से सॉल्यूशन दिया था। मैंने कहा हम agriculture feeder अलग करते हैं, domestic feeder अलग करते हैं और फिर उस काम को किया और एक-एक जिले को पकड़कर के काम पूरा करता था। बाकि जगह पर चलता था लेकिन एक काम पूरा था। फिर उस जिले का बड़ा समिट करता था। ढाई-तीन लाख लोग आते थे क्योंकि 24 घंटे बिजली मिलना एक बड़ा आनंद उत्सव का समय था वो 2003-04-05 का कालखंड था। लेकिन उसमें मैंने देखा, मैंने देशभर में बिजली से होने वाले काम, बिजली से चलने वाले यंत्र उनकी एक बहुत बड़ी प्रदर्शनी लगाई थी। जब लोगों ने, वरना लोगों को क्या लगता है। बिजली आई यानि रात को खाना खाने समय बिजली मिलेगी। बिजली आई मतलब टीवी देखने के लिए काम आ जायेगा। इसका कई प्रकार से उपयोग हो सकता है, उसका एजुकेशन भी जरूरी था। मैं ये 2003-04-05 की बात कर रहा हूं और जब वो सारा exhibition लगाया तो लोग टेलर भी सोचने लगा, मैं इलेक्ट्रिक मेरा equipment, ऐसे लुंगा। कुम्हार भी सोचने लगा कि मैं ऐसे इलेक्ट्रिक व्हीकल लुंगा। माताएं-बहनें भी लगी किचन में हमारे इलेक्ट्रिक वाले इतनी इतनी चीजें आ सकती हैं। यानि एक बहुत बड़ा मार्केट खड़ा हुआ और बिजली का multiple utility जीवन के सामान्य जीवन में 5जी भी उतना जल्दी लोगों को लगेगा हां यार अब तो वीडियो बहुत जल्दी डाउनलोड हो जाता है। रील देखना है तो बहुत इंतजार नहीं करता है। फोन कट नहीं होता है। साफ-सुथरी वीडियो कांफ्रेंस हो सकती है। फोन कॉल हो सकता है। इतने से सीमित नहीं है। ये जीवन को बदलने वाली व्यवस्था के रूप में आ रहा है और इसलिए मैं इस उद्योग जगत के मित्रों के association को कहूंगा कि आप स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी और हिन्दुस्तान के हर डिस्ट्रिक्ट में जाकर के इसके कितने पहलु हैं और आप देखिए कि वो लोग उसमें value addition करेंगे। तो एक आपके लिए सेवा का काम भी हो जायेगा और मैं चाहूंगा कि इस टेक्नोलॉजी जीवन में सिर्फ बातचीत करने के लिए या कोई वीडियो देखने के लिए सीमित नहीं रहनी चाहिए। ये पूरी तरह एक क्रांति लाने के लिए उपयोग होना चाहिए और हमें 130 करोड़ दिशवासियों तक एक बार पहुंचना है बाद में तो वो पहुंचा देगा आप देख लीजिए, आपको टाईम नहीं लगेगा। अभी मैंने ड्रोन पॉलिसी अभी-अभी लाया था। आज कई क्षेत्रों में मैं देख रहा हूं। वो ड्रोन से अपना दवाईयां छिड़काव का काम शुरू कर दिया उन्होंने। ड्रोन चलाना सिख लिया है और इसलिए मैं समझता हूं कि हमें इन व्यवस्थाओं की तरफ जाना चाहिए।

और साथियों,

आने वाले समय में देश निरंतर ऐसी technologies का नेतृत्व करेगा, जो भारत में जन्मेंगी, जो भारत को ग्लोबल लीडर बनाएँगी। इसी विश्वास के साथ, आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं! एक बार फिर सभी देशवासियों को शक्ति उपासना के पावन पर्व पर शक्ति का एक बहुत बड़ा माध्यम 5 जी लॉन्च होने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद!

DS/LP/DK/AK

(रिलीज आईडी: 1864153) आगंतुक पटल : 708

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Assamese , Bengali , Manipuri , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय



बेंगलुरु प्रौद्योगिकी सम्मेलन में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 16 NOV 2022 11:02AM by PIB Delhi

तकनीक की दुनिया के लीडर्स, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों और मित्रों,

एल्लारिगू नमस्कारा, भारत में आपका स्वागत है! नम्म कन्नडा नाडिगे स्वागता, नम्म बेनालुरिगे स्वागता।

मित्रों,

मुझे एक बार फिर बेंगलुरु प्रौद्योगिकी सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मुझे विश्वास है कि आप सभी कर्नाटक के उत्साहपूर्ण लोगों और जीवंत संस्कृति से आत्मीय लगाव रखते हैं।

मित्रों,

बेंगलुरु प्रौद्योगिकी और विचार नेतृत्व का मूल केन्द्र है। यह एक समावेशी शहर है। यह एक अभिनव शहर भी है। कई वर्षों से बेंगलुरु भारत के अभिनव सूचकांक में शीर्ष पर है।

मित्रों,

भारत की तकनीक और नवोन्मेष ने पहले ही दुनिया को प्रभावित किया है लेकिन भविष्य हमारे वर्तमान से बहुत व्यापक और उज्ज्वल होगा। क्योंकि भारत के पास नवोन्मेषी युवा और बढ़ती तकनीकी पहुंच है।

मित्रों,

भारत के युवाओं की शक्ति दुनिया भर में जानी जाती है। उन्होंने तकनीकी वैश्वीकरण और प्रतिभा वैश्वीकरण सुनिश्चित किया है। स्वास्थ्य देखभाल, प्रबंधन, वित्त- आप युवा भारतीयों को कई क्षेत्रों में अग्रणी पाएंगे। हम अपनी प्रतिभा का उपयोग वैश्विक कल्याण के लिए कर रहे हैं। भारत में भी इसका असर देखने को मिल रहा है। भारत इस वर्ष वैश्विक नवोन्मेष सूचकांक में 40वें स्थान पर पहुंच गया है। 2015 में, हम 81वें स्थान पर थे! भारत में यूनिकॉर्न स्टार्ट-अप की संख्या 2021 से दोगुनी हो गई है! अब हम दुनिया के तीसरे सबसे बड़े स्टार्ट-अप हब हैं। हमारे पास 81,000 से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप हैं। सैकड़ों अंतरराष्ट्रीय कंपनियां हैं जिनके भारत में अनुसंधान एवं विकास केंद्र हैं। यह भारत के टैलेंट पूल के कारण है।

मित्रों,

तकनीकी पहुंच बढ़ाकर भारतीय युवाओं को सशक्त बनाया जा रहा है। देश में मोबाइल और डेटा क्रांति हो रही है। पिछले 8 वर्षों में, ब्रॉडबैंड कनेक्शन 60 मिलियन से बढ़कर 810 मिलियन हो गए, स्मार्टफोन उपयोगकर्ता 150 मिलियन से 750 मिलियन हो गए। इंटरनेट का विकास शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से हो रहा है। सूचना सुपरहाइवे से एक नई आबादी को जोड़ा जा रहा है।

मित्रों

लंबे समय तक, प्रौद्योगिकी को एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में देखा जाता था। यह केवल संप्रान्त और साधनयुक्त लोगों के लिए कहा गया था लेकिन भारत ने दिखाया है कि तकनीक का लोकतंत्रीकरण कैसे किया जाता है। भारत ने यह भी दिखाया है कि तकनीक को मानवीय स्पर्श कैसे दिया जाता है। भारत में, प्रौद्योगिकी समानता और सशक्तिकरण की ताकत है। दुनिया की

सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना आयुष्मान भारत लगभग 20 करोड़ परिवारों को सुरक्षा कवच प्रदान करती है। इसका मतलब है, लगभग 600 मिलियन लोग! यह प्रोग्राम एक टेक प्लेटफॉर्म पर आधारित है। भारत ने दुनिया का सबसे बड़ा कोविड-19 वैक्सीन अभियान चलाया। इसे कोविन नामक एक तकनीक-आधारित प्लेटफॉर्म के माध्यम से चलाया गया था। आइए हम स्वास्थ्य क्षेत्र से शिक्षा की बात करें।

मित्रों,

भारत मुक्त पाठ्यक्रमों के सबसे बड़े ऑनलाइन भंडारों में से एक है। विभिन्न विषयों में हजारों पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। 10 मिलियन से अधिक सफल प्रमाणन हुआ है। यह सब ऑनलाइन और निःशुल्क तरीके से किया जाता है। हमारे डेटा टैरिफ दुनिया में सबसे कम हैं। कोविड-19 के दौरान, कम डेटा लागत ने गरीब छात्रों को ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने में मदद की। इसके बिना उनके लिए दो मूल्यवान वर्ष बर्बाद हो जाते।

मित्रों,

भारत गरीबी के खिलाफ जंग में तकनीक का इस्तेमाल हथियार के तौर पर कर रहा है। स्वामित्व योजना के तहत, हम ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि का नक्शा बनाने के लिए ड्रोन का उपयोग कर रहे हैं। फिर, लोगों को संपत्ति कार्ड दिए जाते हैं। इससे भूमि विवाद कम होता है। यह गरीबों को वित्तीय सेवाओं और ऋण तक पहुंचने में भी मदद करता है। कोविड-19 के दौरान कई देश एक समस्या से जूझ रहे थे। वे जानते थे कि लोगों को मदद की जरूरत है। वे जानते थे कि लाभ हस्तांतरण से मदद मिलेगी लेकिन उनके पास लोगों को लाभ देने के लिए बुनियादी ढांचा नहीं था। लेकिन भारत ने दिखाया कि कैसे तकनीक बेहतर के लिए एक सामर्थ्य साबित हो सकती है। हमारे जन धन आधार मोबाइल ट्रिनिटी ने हमें सीधे लाभ हस्तांतरित करने की क्षमता दी। लाभ सीधे प्रमाणित और सत्यापित लाभार्थियों को मिला। गरीबों के बैंक खातों में करोड़ों रुपये पहुंचे। कोविड-19 के दौरान, हर कोई छोटे व्यवसायों को लेकर चिंतित था। हमने उनकी मदद की लेकिन हम एक कदम और आगे बढ़ गए। हम व्यवसाय को फिर से शुरू करने के लिए सड़क विक्रेताओं को कार्यशील पूंजी तक पहुंचने में मदद करते हैं। डिजिटल भुगतान का उपयोग शुरू करने वालों को प्रोत्साहन दिया जाता है। यह डिजिटल लेनदेन उनके लिए जीवन का एक तरीका बन रहा है।

मित्रों,

क्या आपने एक सफल ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म चलाने वाली सरकार के बारे में सुना है? यह भारत में हुआ है। हमारे पास सरकारी ई-मार्केटप्लेस है, जिसे जीईएम (जैम) भी कहा जाता है। यह एक ऐसा मंच है जहां छोटे व्यापारी और व्यवसाय सरकार की जरूरतों को पूरा करते हैं। प्रौद्योगिकी ने छोटे व्यवसायों को एक बड़ा ग्राहक खोजने में मदद की है। साथ ही इससे भ्रष्टाचार की गुंजाइश कम हुई है। इसी तरह, प्रौद्योगिकी ने ऑनलाइन निविदा में मदद की है। इससे परियोजनाओं में तेजी आई है और पारदर्शिता को बढ़ावा मिला है। इसने पिछले वर्ष एक ट्रिलियन रुपये के खरीद मूल्य तक पहुंच बनाई है।

मित्रों,

नवाचार महत्वपूर्ण लेकिन जब इसे एकीकरण से समर्थन दिया जाता है, तो यह एक ताकत बन जाता है। एकाधिकार को समाप्त करने, तालमेल को सक्षम करने और सेवा सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है। एक साझा मंच पर, कोई एकाधिकार नहीं होता है। उदाहरण के लिए, पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टरप्लान को लें। भारत अगले कुछ वर्षों में बुनियादी ढांचे में 100 ट्रिलियन रुपये से अधिक का निवेश कर रहा है। किसी भी बुनियादी ढांचा परियोजना में हितधारकों की संख्या बहुत बड़ी होती है। परंपरागत रूप से, भारत में, बड़ी परियोजनाओं में अक्सर देरी होती थी। खर्चों का ज्यादा होना, और समय-सीमा बढ़ाना आम बात हुआ करती थी लेकिन अब, हमारे पास गति शक्ति का साझा मंच है। केंद्र सरकार, राज्य सरकारें, जिला प्रशासन, विभिन्न विभाग समन्वय कर सकते हैं। इनमें से प्रत्येक जानता है कि दूसरा क्या कर रहा है। एक ही स्थान पर परियोजनाओं, भूमि उपयोग और संस्थानों से संबंधित जानकारी उपलब्ध है। इसलिए, प्रत्येक हितधारक समान डेटा देखता है। यह समन्वय में सुधार करता है और समस्याओं को होने से पहले ही हल कर देता है। यह स्वीकृति और भुगतानों में तेजी ला रहा है।

मित्रों,

भारत अब लालफीताशाही के लिए जानी जाने वाली जगह नहीं रहा। चाहे एफडीआई सुधार हो, या ड्रोन नियमों का उदारीकरण, सेमीकंडक्टर क्षेत्र में कदम हो या विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन प्रोत्साहन योजनाएं हों या कारोबार में आसानी, अब यह निवेशकों के लिए सबसे पसंदीदा स्थल के रूप में जाना जाता है।

मित्रों,

भारत में कई बेहतरीन कारक एक साथ कार्य कर रहे हैं। आपका निवेश और हमारा नवाचार चमत्कार कर सकता है। आपका विश्वास और हमारी तकनीकी प्रतिभा नई अविष्कारों का सृजन कर सकती है। मैं आप सभी को हमारे साथ काम करने के लिए आमंत्रित करता हूँ क्योंकि हम दुनिया की समस्याओं को हल करने में अग्रणी हैं। मुझे यकीन है कि बेंगलुरु प्रौद्योगिकी सम्मेलन में आपके द्वारा किया जाने वाला विचार-विमर्श रोचक और लाभकारी सिद्ध होगा। मैं आपको इसके लिए सर्वश्रेष्ठ की कामना करता हूँ।

एमजी/एम/एसएस

(रिलीज़ आईडी: 1877220) आगंतुक पटल : 119

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Assamese , Manipuri , Bengali , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam